

राम कृष्ण

मंत्रक

की शायरी



संकलन: अमर दहलद

अपनी आंखों में सूरज छुपाए हुए !
हम भटकते रहे रोशनी के लिये!!
के० के० सिंह "मयंक"

स्टार पाकेट सीरीज़ की असाधारण भेंट!

इस क्रम में प्रस्तुत कर रहे हैं आप के प्रिय उर्दू शायरों की चुनी हुई शायरी—उर्दू और हिन्दी लिपि में एक साथ!

- 'अकबर' इलाहबादी की शायरी
- 'नज़ीर' बनारसी की शायरी
- इफ्तेखार 'आरिफ़' की शायरी
- कृष्ण 'मोहन' की शायरी
- 'मयंक' की शायरी

- अमृता प्रीतम की शायरी
- 'कैफ़ी' आजमी की शायरी
- 'अदम' की शायरी
- 'फैज़' की शायरी
- 'असगर' की शायरी

- 'मीर' की शायरी
- 'दद' की शायरी
- 'जिगर' की शायरी
- 'जोश' की शायरी
- 'शाद' की शायरी

- 'दाग' की शायरी
- 'इकबाल' की शायरी
- 'हफीज़' की शायरी
- जॉ निसार 'अख्तर' की शायरी
- 'कतील' की शायरी

- 'गालिब' की शायरी
- 'ज़फ़र' की शायरी
- 'शकील' की शायरी
- 'मुज़ाज़' की शायरी
- 'साहिर' की शायरी

इस क्रम में उर्दू के अन्य प्रसिद्ध कवियों की शायरी के संकलन भी शीघ्र प्रकाशित किए जायेंगे

स्टार पाकेट सीरीज़

के० के० सिंह "मयंक"

की

शायरी

(हिन्दी, उर्दू में एक साथ)

संकलनकर्ता

अमर देहलवी

Dehlvi Amar (Comp.) :
MAYANK KI SHAIRI
(Poetry Collection)
Star, New Delhi, 1985
Rs. 6.00

प्रथम संस्करण

1985

वितरक :

स्टार पब्लिकेशंज़ (सेल्स)
1641, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

□ प्रकाशक :

स्टार पाकेट बुक्स

4.5 बी, आसफ़ अली रोड, नई दिल्ली-110002

□ मूल्य : छः रुपये मात्र (6.00)

□ मुद्रक : **स्ववाणी प्रेस दिल्ली**

शायर के बारे में

नाम कृष्ण कुमार सिंह 'तख्तुसे' 'मयंक' अकबराबादी जन्म सन् 1944 ग्राम पडगरी कसबा राया जिला मथुरा उ.प्र. में हुआ।

किन्तु बाद में आगरा (अकबराबाद) में अपने बड़े भाई महेश चन्द्र कदम के पास आ गये श्री कदम ने पूरी तालीम दिलाई। पिता जी के स्वर्गवास के बाद भाई ने पिता का प्यार दिया।

सन् 1962 में के०के० सिंह 'मयंक' ने B.A. पास किया सन् 1964 में M.A. तथा 1966 में LLB पास किया 1969 में पश्चिम रेलवे में अफसर बने 1971 में श्री पूरन सिंह पिपिल की पुत्री सरोज सिंह से विवाह हुआ।

शैरो शायरी का शौक कुछ इस तरह पैदा हुआ कि शुरू शुरू में लोक धुनों पर गीत लिखना प्रारंभ किया। ऐसा श्री कृष्ण भगवान की जन्म भूमि पर हो रहे लोक साहित्य के प्रति रूचि रखने के कारण हुआ।

बृज की पावन भूमि स्वतः ही ऐसा शौक जोक पैदा कर देती है। फिर गजल नज्म आदि लिखना शुरू किया। और ना मालूम ये शौक कब नशे में बदल गया।

अब जब भी समय मिलता है कुछ न कुछ कहते हैं। रेल सेवा के दौरान पश्चिम रेलवे के राजकोट मण्डल पर हिन्दी समाज राजकोट के सौजन्य से प्रसारित आकाशवाणी राजकोट केन्द्र द्वारा कुछ लोग गीत रिकार्ड हुये।

1980 में 'मयंक' साहब रतलाम मण्डल पर आ गये। यहां इन्होंने शायरी बाकायदा तरीके से शुरू की। और शायर उस्ताद सूफी हजरत बिसमिल नक्षबन्दी को अपना उस्ताद बनाया और शैरो शायरी के साथ

साथ (उरूज) शायरी के औज़ान भी इन से सीखे।

"मयंक" साहब के अभी तक 4 काव्य संकलन प्रकाशित होकर ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। क्रमशः कुछ गीत अनाम के नाम "जज्ब-ए-इश्क" "मयंक की गज़लें" और जुनून (उर्दू) इसके अतिरिक्त आल इन्डिया रेडियो इन्दौर से भी "मयंक" जी की गज़लें सुनने को मिलती हैं कब्बाल तथा संगीत निर्देशक श्री शंकर शमर के माध्यम से रेडियो तथा दूरदर्शन से भी इनकी गज़ले सुनी जाती हैं।

"मयंक" साहब को शायरी की दुनिया में लाने में उन की धर्म पत्नी श्रीमती सरोज सिंह के अलावा कब्बाल श्री सईद जयपुरी का और संगीतकार श्री रामकुमार शंकर का भी भरपूर सहयोग रहा है।

आप मुशायरे में भी बहतरीन तरन्नुम और नये अंदाज़ से गज़ल पढ़ते हैं।

आप की कई गज़ले आकाशवाणी इन्दौर से मान्य हैं। आप ने हुस्नो शबाब गुम और खुशी जुल्फ और रूखसार फिराक और विसाल संहरा और गुलशन और जामा मीना आदि पर बहुत खूब लिखा है। कहा है।

श्री मयंक की सब से बड़ी खूबी ये है कि आप हर मौके पर उसी रंग के फिलबदी अशआर बहुत अच्छे कहते हैं।

आप की भाषा की विशेषता ये है कि वो आम आदमी के समझ में आ जाती है।

उर्दू नहीं जानने वाला कोई भी इन की गज़लों को आसानी से समझ लेता है। आप अक्सर तरक्की पसंद ग्रुप के साथ देखे जाते हैं। "मयंक" साहब के पसन्दीदा शौरा हैं। "ग़ालिब" मीर "मोमिन" जिगर "जौश" फिराक "शकील" साहिर "फैज" और दुष्यंत कुमार आदि।

श्री के०के० सिंह मयंक पश्चिम रेलवे के रतलाम मण्डल पर वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य अधीक्षक के पद पर हैं।

□



جوان کا نظارہ کرتے ہیں آہوں میں گزارا کرتے ہیں
 گلشن میں نہیں صحرا میں بھی تیرا ہی نظارہ کرتے ہیں
 اک تیری خاطر جانِ ادا کیا کیا نہ گوارا کرتے ہیں
 اے بھولنے والے ہم تجھ کو ہر وقت پکارا کرتے ہیں

قابو میں رکھیں دل کیسے مینک
 وہ روز اشارہ کرتے ہیں



دیکھئے وہ آگئے وہ آگئے
 کیف بن کر روح و دل پر چھاگئے

जो उनका नज़ारा करते हैं!
आहों में गुज़ारा करते हैं!!

गुलशन में नहीं सहारा में भी!
तेरा ही नज़ारा करते हैं!!

इक तेरी खातिर जाने अदा!
क्या क्या न ग्वारा करते हैं!!

ए भूलने वाले हम तुझ को!
हर वक़्त पुकारा करते हैं!!

काबू में रखें दिल कैसे "मयंक"!
वो रोज़ इशारा करते हैं!!

□

देखिए वो आ गये वो आ गये!
कैफ़ बन कर रूहो दिल पर छ गये!!

□

ہے کدھر ہے کدھر ہے کدھر آ اِدھر آ اِدھر آ اِدھر
 موسمِ گل نے دیا ہے خبر پیار کر پیار کر پیار کر
 لے کے آئی ہے پیغامِ غم ہر سحر ہر سحر ہر سحر
 میں بھٹکتا رہا غمِ سحر در بدر در بدر در بدر
 جانے کیوں مجھ کو پیارے لگے ہر بشر ہر بشر ہر بشر
 میرا سایہ ہی ہے اب مرا ہم سفر ہم سفر ہم سفر

تجھ کو منزل ملے گی مینک
 صبر کر صبر کر صبر کر



है किधर है किधर है किधर!
आ इधर आ इधर आ इधर!!

मौसम-ए-गुल ने दी है ख़बर!
प्यार कर प्यार कर प्यार कर!!

ले के आती है पैग़ाम-ए-ग़म!
हर सहर हर सहर हर सहर!!

मैं भटकता रहा उम्रभर!
दर बदर दर बदर दर बदर!!

जाने क्यूं मुझ को प्यारा लगे!
हर बशर हर बशर हर बशर!!

मेरा साया ही है अब मेरा!
हम सफ़र हम सफ़र हम सफ़र!!

तुझ को मंज़िल मिलेगी "मयंक"!
सब कर सब कर सब कर!!

یہ جہاں یہ جہاں یہ جہاں
 خوں چکاں خوں چکاں خوں چکاں
 گل جو مہکا مہکنے لگا
 گلستاں گلستاں گلستاں
 بن کے آیا ہے گلچیں یہاں
 باغیاں باغیاں باغیاں
 سونا سونا ہے تیرے پنا
 یہ جہاں یہ جہاں یہ جہاں
 دور کر میرے دل کی خزاں
 جانِ جاں جانِ جاں جانِ جاں
 تویلے راہ میں تو بنے
 کارواں کارواں کارواں

سن لو اپنے مینک کی سبھی تم
 داستاں داستاں داستاں



ये जहां ये जहां ये जहां!
खूचिकां खूचिकां खूचिकां!!

गुल जो महका महकने लगा!
गुलसिंता गुलसितां गुलसितां!!

बन के आया है गुलचीं यहां!
बांगबां बागबां बागबां!!

सूना सूना है तेरे बिना!
ये जहां ये जहां ये जहां!!

दूर कर मेरे दिल की छिजां!
जान-ए-जां जान-ए-जां जान-ए-जां!!

तू मिले राह में तो बने!
कारवां कारवां कारवां!!

सुन लो अपने "मयंक" की भी तुम!
दास्तां दास्तां दास्तां!!

وہ کبھی ہم سے وفا کرتے نہیں ہم مگر ان سے گلہ کرتے نہیں
 دوستی کی بات کرتے ہیں مگر دوستی کا حق ادا کرتے نہیں
 کٹ گئی جو عمر ان کے پیار میں ہم تو کچھ اس کا گلہ کرتے نہیں
 دردِ جن کے دل میں ہوتا ہے جتنا وہ کسی کا سبھی برا کرتے نہیں

عشق تو اک بار ہوتا ہے مینک
 عشق جگ میں بار بار کرتے نہیں



ٹوٹ کر گرتے ستارے بھی ہمیں
 زندہ رہنے کی ادا سیکھلا گئے

वो कभी हम से वफा करते नहीं!
हम मगर इन से गिला करते नहीं!!

दोस्ती की बात करते हैं मगर!
दोस्ती का हक अदा करते नहीं!!

कट गई जो उम्र उन के प्यार में!
हम तो कुछ इस का गिला करते नहीं!!

दर्द जिन के दिल में होता है जनाब!
वो किसी का भी बुरा करते नहीं!!

इश्क तो इक बार होता है "मयंक"!
इश्क जग में बारहा करते नहीं!!

□

टूट कर गिरते सितारे भी हमें!
जिंदा रहने की अदा सिखला गये!!

□

حُسن کی شان یوں دکھاتے ہیں بس ہمیں خاک میں ملاتے ہیں
 جذبہِ غم کی خیر ہو یا رب اشک آنکھوں میں آئے جاتے ہیں
 پہلے ہم سے نظر ملاتے تھے آج آنکھیں ہمیں دکھاتے ہیں
 عشق میں غم ہی غم ملے ہیں ہمیں سب سچی داستان سناتے ہیں

پیار کی آگ بوجھ نہیں سکتی
 سپر مینک اشک کیوں بہاتے ہیں



ایک نغمہ سا فیضا میں گھل گیا
 وہ لبوں سے کیا ترنم گا گئے

हुस्न की शान यू दिखाते हैं!
बस हमें खाक में मिलाते हैं!!

जज़्ब-ए-ग़म की खैर हो या रब!
अशक आंखों में आए जाते हैं!!

पहले हम से नज़र मिलाते थे!
आज आंखें हमें दिखाते हैं!!

इश्क में ग़म ही ग़म मिलेंगे हमें!
सब यही दास्तां सुनाते हैं!!

प्यार की आग बुझ नहीं सकती!
फिर "मयंक" अशक क्यूं बहाते हैं!!



एक नग़मा सा फ़िज़ा में घुल गया!
वो लबों से क्या तरनुम गा गये!!



غم ضروری سہی زندگی کے لئے غم کی دولت نہیں ہر کسی کے لئے
 اپنی آنکھوں میں سورج چمکائے ہم بھٹکتے رہے روشنی کے لئے
 زندگی وہ جو غیروں کے کام آسکے زندگی تو ہے بس زندگی کے لئے
 بڑھ کے بڑھادے جو تارکیوں کے ستارے دل جلا راہ میں روشنی کے لئے

اے مینک اب ترے سجدے ہونگے قبول
 سر جھکایا رکی بندگی کے لئے



آج شرمندہ ہوا ہے یہ مینک
 دوست مجھ کو آئینہ دکھلا گئے

ग़म ज़रूरी सही जिंदगी के लिये!
ग़म की झीलत नहीं हर किसी के लिये!!

अपनी आंखों में सूरज छुपाए हुए!
हम भटकते रहे रौशनी के लिये!!

जिंदगी वो जो गैरों के काम आ सके!
जिंदगी तो है बस जिंदगी के लिये!!

बढ़ के ढ़ा दे जो तारिकियों के सुत!
दिल जला राह में रौशनी के लिए!!

ए "मयंक" अब तेरे सजदे होंगे कबूल!
सर झुका यार की बंदगी के लिये!!

□

आज शर्मिदा हुआ है ये मयंक!
दोस्त मुझ को आईना दिखला गए!!

□

جس پہ تیری نظر گئی ہوتی اُس کی قسمت سنو گئی ہوتی
 زندگانی سنو گئی ہوتی پیار میں جو گزر گئی ہوتی
 چاند بدلی میں چھپ گیا ہوتا زلفِ رخ پر بکھر گئی ہوتی
 تم جو آجاتے پریش غم کو غم کی تندی اُتر گئی ہوتی

وہ نہ آتے جو خواب میں اے مینک
 آرزو کب کی مر گئی ہوتی



سیکڑوں میں ایک دو ہونگے کوئی
 جو مرادیں اپنے دل کی پا گئے

जिस पे तेरी नज़र गई होती!
उस की किसमत संवर गई होती!!

जिंदगानी संवर गई होती!
प्यार में जो गुज़र गई होती!!

चांद बदली में छुप गया होता!
जुल्फ़ रुख़ पर बिखर गई होती!!

तुम जो आ जाते पुर सिशे ग़म को!
ग़म की नदी उतर गई होती!!

वो न आते जो ख्याल में ऐ "मयंक"!
आरजू कब की मर गई होती!!

□

सैंकड़ों में एक दो होंगे कोई!
जो मुरादें अपनी दिल की पा गए!!

□

طرف ساتی کا آزمانا ہے آج موسم بڑا سہانا ہے

جن کو فرصت نہیں ہے سننے کی حالِ دل اُن کو ہی سنانا ہے

وعدہ کر کے جو بھول جاتے ہیں ہم کو اُن سے ہی تو بچانا ہے

جو ہمارے نہیں ہوئے اب تک اُن کو اپنا ہمیں سے بنانا ہے

اُن کی فرقت میں اے مینک تمہیں
گیت لکھ لکھ کے لگنا سانا ہے



حسنِ رُوحِ رُواں تلاش کریں
بندہ پرور کہاں تلاش کریں

अर्फ साकी का आजमाना है!
आज मौसम बड़ा सुहाना!!

जिन को फुसर्त नहीं है सुनने की!
हाले दिल उन को ही सुनाना है!!

वादा कर के जो भूल जाते हैं!
हम को उन से ही तो निभाना है!!

जो हमारे नहीं हुए अब तक!
उन को अपना हमें बनाना है!!

उन की फुर्कत में ए "मयंक" तुम्हें!
गीत लिख लिख के गुनगुनाना है!!

□

हुस्न रूहे रवां तलाश करें!
बंदा पर वर कहां तलाश करें!!

□

حسنِ روحِ رواں تلاش کریں بندہ پر در کہہاں تلاش کریں

آؤ تمیہ آشیان کے لئے چرخ پر بجلیاں تلاش کریں

آؤ خوشیوں کی تیز دھوپ میں ہم غم کی پر چھایاں تلاش کریں

ہوئے تفریقِ رنگ و نسل جہاں کوئی ایسا جہاں تلاش کریں

حسن کی ایک شگفتگی کو میتک
گلتاں گلتاں تلاش کریں



آؤ تمیہ آشیان کے لئے
چرخ پر بجلیاں تلاش کریں

हुस्न रुह-ए-रवां तलाश करें
 बन्दा परवर कहां तलाश करें
 आओ तामीरे आशियां के लिये!
 चर्ख पर बिजलियां तलाश करें!!

आओ खुशियों की तेज धूप में हम!
 गुम की परछाईयां तलाश करें!!

हो न तफरीके रंगो नस्ल जहां!
 कोई ऐसा जहां तलाश करें!!

हुस्न की इक शगुपतगी को "मयंक"!
 गुलसितां गुलसितां तलाश करें!!
 आओ तामीरे आशियां के लिए
 चर्ख पर बिजलियां तलाश करें

□

گزرتی ہے آب جو بتائی نہ جائے تری یاد دل سے بھلائی نہ جائے
 محبت میں اپنی جو حالت ہوئی ہے کسی کو وہ آئے دل بتائی نہ جائے
 ہے دامن شکستہ تو تلوار میں کانٹے جنوں کی یہ حالت دکھائی نہ جائے
 یہ تصویر جاناں جو دل میں بسی ہے تصور سے آب تو ہٹائی نہ جائے

محبت ہماری جو ظاہر ہوئی ہے
 مینک آب چھپائے چھپائی نہ جائے



ہنوز پیار مرا آزمائے جاتے ہیں
 ٹھہر ٹھہر کے ستم مجھ پہ ڈھا جاتے ہیں

गुज़रती है अब जो बताई न जाए!
तेरी याद दिल से भुलाई न जाए!!

मोहब्बत में अपनी जो हालत हुई है!
किसी को वो ऐ दिल बताई न जाए!!

है दामन शिकस्ता तो तलवों में कांटे!
जुनुं की ये हालत दिखाई न जाए!!

ये तसवीर-ए-जाना जो दिल में बसी है!
तसद्वुर से अब तो हटाई न जाए!!

मोहब्बत हमारी जो जाहिर हुई है!
"मयंक" अब छुपाए छुपाई न जाए!!

□

हुनूज़ प्यार मेरा आजमाए जाते हैं!
ठहर ठहर के सितम मुझ पे द्राए जाते हैं!!

□

اپنی چاہت کا آسرا دے دو اب تو دامن کی کچھ ہوا دے دو
 جانِ من کچھ کرو میجائی دلِ بیمار کو دوا دے دو
 تم مجھے ایک بار مل جاؤ چاہے پھر موت کی سزا دے دو
 تم جفاؤں سے باز مت آؤ کچھ وفادوں کا تو صلہ دے دو

امتحاں لو مینک کا پہلے
 شوق سے پھر کوئی سزا دے دو



تمام رات اُنہیں سبھی سکونِ دلِ نہ ملے
 جو نیند آنکھوں سے میری اڑائے جاتے ہیں

अपनी चाहत का आसरा दे दो!
अब तो दामन की कुछ हवा दे दो!!

जाने-मन कुछ करो मसीहाई!
दिले बीमार को दवा दे दो!!

तुम मुझे एक बार, मिल जाओ!
चाहे फिर मौत की सज़ा दे दो!!

तुम जफ़ाओं से बाज़ मत आओ!
कुछ वफ़ाओं का तो सिला दे दो!!

इम्तेहां लो "मयंक" का पहले!
शौक से फिर कोई सज़ा दे दो!!

□

तमाम रात उन्हें भी सुकून-ए-दिल न मिले!
जो नींद आंखों से मेरी उड़ाए जाते हैं!!

زندگی یوں گزارتے ہیں ہم بگڑی قسمت سنوارتے ہیں ہم
 وقت جو اُن کے ساتھ گزرا ہے اُس کو دل میں اتارتے ہیں ہم
 سچوں کو اپنے سامنے رکھ کر روپ اس کا نہا برتے ہیں ہم
 انجمن انجمن خدا کی قسم اک سچھی کو پکارتے ہیں ہم

اے مینک عشق میں کسی کے لئے
 جیتی بازی کو ہارتے ہاں سے ہم



ہزار بار دیا میں نے امتحانِ وفا
 مگر وہ سچر بھی مجھ آزمائے جاتے ہیں

जिंदगी यूँ गुज़ारते हैं हम!
बिगड़ी किसमत संवारते हैं हम!!

वक़्त जो उन के साथ गुज़रा है!
उस को दिल में उतारते हैं हम!!

फूल को अपने सामने रख कर!
रूप उस का निहारते हैं हम!!

अंजूमन अंजूमन खुदा की कसम!
इक तुझी को पुकारते हैं हम!!

ऐ "मयंक" इश्क़ में किसी के लिये!
जीती बाज़ी को हारते हैं हम!!

□

हज़ार बार दिया मैंने इस्तेहाने वफ़ा!
मगर वो फिर भी मुझे आजमाए जाते हैं!!

□

میری حیات میں اُفت کا رنگ بھرتا ہے یہ کون سا سج مری راہ سے گزرتا ہے

اُسی کو کہتے ہیں اکثر یہ جہاں والے جو خاک بن کے تری راہ سے گزرتا ہے

ترے فراق میں جب اشک ہم بہتا ہے ہر ایک اشک میں سایہ ترا اُبھرتا ہے

عجیب دھوم ہے بزمِ جہاں میں چاروں طرف وہ آرہے ہیں تو ہر آشنا سنو رہے

مینک ایسا بھی اک شخص ہم نے دیکھا ہے
وفا کا نام بھی لیتے ہوئے جو ڈرتا ہے



مینک برٹھ کے بچھا دو یہ نقرتوں کے چراغ
اُجالے پیار کی بستی جلائے جاتے ہیں

मेरी हयात में उलफ़त के रंग भरता है!
 ये कौन आज मेरी राह से गुज़रता है!!

उसी को कहते हैं अकसीर ये जहां वाले!
 जो खाक बन के तेरी राह में गुज़रता है!!

तेरे फिराक में जब अशक हम बहाते हैं!
 हरेक अशक में साया मेरा उभरता है!!

अजीब धूम है बजमें जहां में चारों तरफ!
 वो आ रहे हैं तो हर आशना संवरता है!!

"मयंक" ऐसा भी इक शख्स हमने देखा है!
 वफ़ा का नाम भी लेते हुए जो डरता है!!



"मयंक" बड़ के बुझा दो ये नफ़रतों के चराग़!
 उजाले प्यार की बस्ती जलाए जाते हैं!!



راہ کے پتھر کو ٹھوکر سے ہٹا دیتے ہیں ہم جب کوئی مدد سے گزرتا ہے سزا دیتے ہیں ہم
 تنگ آ کر موت کو بھی خود کشی کرنی پڑی دیکھ اب حالات ایسے ہی بنا دیتے ہیں ہم
 آئے تم پر وہ اسی میں ہے اگر تیری خوشی لے ترے قدموں پاپنا سر جھکا دیتے ہیں ہم
 آنکھ میں آنسو ہیں لیکن آنیس زندگی تیرا دل رکھنے کی خاطر مسکرا دیتے ہیں ہم

رشک سے تکتے ہیں ہم کو سب فرشتے آئے مینک
 جب خلوص دل سے دشمن کو دعا دیتے ہیں ہم

آئے دلِ ناداں کوئی غم نہ کر
 گزری باتیں بھول جا ما تم نہ کر

राह के पत्थर को ठेकर से हटा देते हैं हम!
जब कोई हद से गुज़रता है सज़ा देते हैं हम!!

तंग आकर मौत को भी खुदकशी करनी पड़ी!
देख अब हालात ऐसी ही बना देते हैं हम!!

ऐ सितम पर वर इसी में है अगर तेरी खुशी!
ले तेरे कदमों पे सर अपना झुका देते हैं हम!!

आंख में आसू हैं लेकिन ऐ अनीस-ऐ-जिंदगी!
तेरा दिल रखने की खातिर मुस्कुरा देते हम!!

इश्क से तकते हैं हम को सब फरिश्ते ऐ "मयंक"!
जब खुलूस-ऐ-दिल से दुश्मन को दुआ देते हम!!



ऐ दिल-ए-नादान कोई ग़म न कर!
गुज़री बातें भूल जा मातम न कर!!



جلوہ معتبر دیکھ لیجئے ذرا آپ دل کی نظر دیکھ لیجئے ذرا
 جستجو میں جو ان کی گزرتے رہے ایسے شامِ اوسحردیکھ لیجئے ذرا
 جس نے پہلی آوا میں چرایا اتحادِ اس کی پہلی نظر دیکھ لیجئے ذرا
 دور ہو کر بھی خود جو تیرے پاس ہے اہتمامِ نظر دیکھ لیجئے ذرا

مذکرے حسن کے تم ہی چھٹرو میں گ
 چپ ہے کیوں ہر بشر دیکھ لیجئے ذرا



ایک دن منزلِ تجھ مل جائے گی
 حوصلوں کو اپنے راہی کم نہ کر

जलव-ऐ-मोतवर देख लीजे ज़रा!
आप दिल की नज़र देख लीजे ज़रा!!

जुस्तजू में जो उनकी गुज़रते रहे!
ऐसे शाम-ओ-सहर देख लीजे ज़रा!!

जिसने पहली अदा में चुराया था दिल!
उस की पहली नज़र देख लीजे ज़रा!!

दूर होकर भी खुद जो तेरे पास है!
एहतमाम-रे-नज़र देख लीजे ज़रा!!

तज़क़िरे हुस्न के तुम भी छेड़ो "मयंक"!
चुप है क्यं हर बशर देख लीजे ज़रा!!

□

एक दिन मंज़िल करीब आ जाएगी!
होसलों को अपने राही कम न करे!!

□

وہ جو آئے چین کو جواب آگیا فطرت گل میں سجھا انقلاب آگیا

جذبہ عشق جب سرور ہونے لگا لے کے قاصد خطوں کا جواب آگیا

جب نگاہوں کے ہونے لگے نذرے خود بخود یار و ذکر شراب آگیا

وہ وفا بھول کر کر رہے ہیں جفا دیکھو وقت کیسا خراب آگیا

یہ مینک اپنی فطرت پہ جب آگیا
تیرہ راتوں پہ تب تب شباب آگیا



عاشقی پر حرف آئے گا مینک
اس طرح تو شکوہ پیہم نہ کر

वो जो आए चमन को हिजाब आ गया!
फितरत-ऐ-गुल में भी इन्कलाब आ गया!!

जब्-ऐ-इश्क जब सर्द होने लगा!
ले के कासिद खतों का जवाब आ गया!!

जब निगाहों के होने लगे तज़किरे!
खुद ब खुद यारो ज़िक्-ऐ-शराब आ गया!!

वो वफ़ा भूल कर कर रहे हैं जफ़ा!
देखिये वक़्त कैसा ख़राब आ गया!!

ये "मयंक" अपनी फ़ितरत पे जब आ गया!
तेरी रातों पे तब तब शबाब आ गया!!



आशिकी में हर्फ़ आयेगा "मयंक"!
इस तरह तू शिकब-ऐ-पैहम न कर!!



ہے وہی اتنا بڑوں کو جو بڑا نئی دے سکے
آنکھ کے تل میں اُسے دنیا دکھائی دے سکے

ہے اسی اک لمحہ بے داد کی مجھ کو تلاش
جو مرے دل کے لئے دردِ جدائی دے سکے

میں سمجھتا ہوں کہ اُن کو سچر سچی شکوہ ہی رہے
گر حریفوں کو خدا ساری خدائی دے سکے

اب وہی محسن ہے اپنا جو کہ آئے اور ہیں
اس مسلسل قیدِ ہستی سے رہائی دے سکے

لوگ کہتے ہیں کہ آتی ہے، ہمیں آوازِ دوست
ہم تو جب مانیں مینک ہم کو سنائی دے سکے



اُن پہ آیا شباب اے مینک طہ کی دھڑکن حواں ہو گئی

है वही इनसां बड़ों को जो बड़ाई दे सके!
आंख के तिल में उसे दुनिया दिखाई दे सके!!

है इसी इक लम्हा-ऐ-बेबाद की मुझ को तलाश!
जो मेरे दिल के लिये दर्द-ऐ-जुदाई दे सके!

मैं समझता हूँ के इन को फिर भी शिकवा ही रहे!
गर हरी सो को खुदा सारी खुदाई दे सके!!

अब वही मोहसिन है अपना जो की आये और हमें!
इस मुसल सल कैद-ऐ-हस्ती से रिहाई दे सके!!

लोग कहते हैं के आती है हमें आवाज़ दोस्त!
हम तो जब जाने "मयंक" हम को सुनाई दे सके!!

□

उन पे आया शबाब ऐ "मयंक"!
दिल की धड़कन जवां हो गई!!

□

ہم نہیں وہ جو رورو کے مر جائیں گے
ہم تو ہر غم سے ہنس کے گزر جائیں گے

آپ نے اپنا وعدہ نبھایا مگر
اپنے بھی کچھ ارادے ٹھہر جائیں گے

ان کی نظروں میں آنے کی ہے آرزو
گو جہاں کی نظر سے اتر جائیں گے

ان پہ الزام آنے نہ دیں گے کبھی
کوئی پوچھے حقیقت مُسکرائیں گے

دیکھ لینا کسی دن چمن میں مینک
پیار کے سچول بن کے بکھر جائیں گے



لاکھ پردے میں ہم چھپ گئے
دل کی حالت عیاں ہو گئی

हम नहीं वो जो रो रो के मर जाएंगे!
हम तो हर गम से हंस के गुज़र जाएंगे!!

आप ने अपना वादा निभाया मगर!
अपने भी कुछ इरादे ठहर जाएंगे!!

उन की नज़रों में आने की है आरजू!
गो जहाँ की नज़र से उतर जाएंगे!!

उन पे इल्ज़ाम आने न देंगे कभी!
कोई पूछे हकीकत मुकर जाएंगे!!

देख लेना किसी दिन चमन में मयंक!
प्यार के फूल बन के बिखर जाएंगे!!



लाख पर्दों में हम छुप गये!
दिल की हालत अयां हो गई!!



وہ خیالوں میں ہم آغوش ہوا کرتی ہے
زندگانی مریا مدہوش ہوا کرتی ہے

شامِ غم بھی پس پر وہ تیرا برق جمال
یک بیک آنکھوں سے روپوش ہوا کرتی ہے

بر سرِ بنم آچلتے ہیں سدا پر وانی
شمع ہر حال میں خاموش ہوا کرتی ہے

ترے دامن کی ہوا راہ ہے جب جب گزری
جسٹو بھی مریا بے ہوش ہوا کرتی ہے

پی کے دیکھو کسی دن تم بھی سرِ بنم امینک
بادۂ عشق تو سر جو شس ہوا کرتی ہے



بیچے سال کو سال یہاں یہ خدائی دکان ہو گئی

वो छयालों में हम आगोश हुआ करती है!
बिंदवानी मेरी मदहोश हुआ करती है!!

शाम-ऐ-ग़म की पस-ए-पर्वा को तेरा बर्क-ए-
जमाल!

यक वयक आंखों से रूपोश हुआ करती है!!

बार सर-ये-बज़्म मचलते हैं क्या परवाने!
शमा हर हाल में खामोश हुआ करती है!!

तेरे बामन की हवा राह से जब जब गुज़री!
जुस्तजू भी मेरी बेहोश हुआ करती है!!

पी के देखो किसी दिन तुम भी सर-ऐ-बज़्म "मयंक"!
बाद-ऐ-इश्क तो सर जौश हुआ करती है!!

□

बेचे	इनसां	को	इनसां	यहां!
ये	खुदाई	दुकां	हो	बर्ई!!

□

انہیں حالِ دل کی خبر نہیں مری جستجو کا یہ نہیں
یہ تو قسموں کا ہی کھیل ہے یہ کسی کی بھی تو خطا نہیں

مجھے راحتوں سے غرض نہیں میں وفا کی راہ میں مٹ چکا
میں بھی ان کی راہ کی دھول ہوں کہ انہیں بھی اس کا پتہ نہیں

جو نظر میں چڑھ گیا شاد ہے جو گرا ہے اُس کا بھی نام ہے
وہ تو کھو گیا کسی بھیر میں جو تیری نظر میں چھا نہیں

مرے گیت ہیں مری دھڑکنیں یہ کتاب ہے مری زندگی
مجھے ناز ہے مری شاعری میری زندگی سے جلد انہیں

ہے بینکِ مٹنے کی چاہ میں نہیں کوئی راہِ نساہ میں
مجھے جس جہاں کی تلاش ہے وہ جہاں جہاں میں ملا نہیں



تم جو روٹھے تو میرے لئے یہ زمیں آسماں ہو گئی

उन्हें हाल-ए-दिल की खबर नहीं मेरी जुस्तजू का पता नहीं!
 ये तो किसमतों का ही खेल है ये किसी कि भी तो खता नहीं!!

मुझे राहतों से गरज़ नहीं मैं वफा की राह में मिट चुका!
 मैं भी उन की राह की धूल हूँ कि उन्हें भी इस का पता नहीं!!

जो नज़र में चढ़ गया है शाद है जो गिरा है उस का भी नाम है!
 वो तो खो गया किसी भीड़ में जो तेरी नज़र में जचा नहीं!!

मेरे गीत हैं मेरी धड़कनें ये किताब है मेरी ज़िंदगी!
 मुझे नाज़ है मेरी शायरी मेरी ज़िंदगी से जुदा नहीं!!

है "मयंक" मिटने की चाह में नहीं कोई राहे निबाह में!
 मुझे जिस जहां की तलाश है वो जहां जहां में मिला नहीं!!

□

तुम जो रूठे तो मेरे लिये!
 ये ज़मीं आसमां हो गई!!

□

تم اگر خود کا ہستی سمجھ جاؤ گے چاند تاروں سے اُدینا جہاں پاؤ گے
 مگر خیالوں کو اپنے نہ کہو گے بُند ہر بلند کا یہ خود ہی نظر آؤ گے
 پہلے تو کلبہ ہی ڈنڈھو کہ خود کیا ہونم جستجو میں خدا کو کبھی پا جاؤ گے
 مگر سناؤ گے ہستی جہاں کے لئے تا اُدنیٰ میں کچھ کر کے دکھلاؤ گے

آج کا کام کل پر نہ چھوڑو عینک
 ورنہ اس زندگی میں پچھتاؤ گے



ہا ستاں سب بیاں ہو گئیں
 آنکھ اس کی زباں ہو گئیں

तुम अगर खुद की हस्ती समझ जाओगे!
चांद तारों से ऊचां जहां पाओगे!!

गर ख्यालों को अपने रखोगे बुलंद!
हर बुलंदी पे खुद ही नज़र आओगे!!

पहले खुद को ही ढूंढो के खुद क्या हो तुम!
जुस्तजू में खुदा को भी पा जाओगे!!

गर मिटाओगे हस्ती जहां के लिये!
नाम दुनिया में कुछ करके दिखलाओगे!!

आज का काम कल पे न छोड़ो "मयंक"!
वर्ना इस जिंदगानी में पछताओगे!!

□

दास्तां सब बयां हो गई!
आंख उस की जुबां हो गई!!

□

ہے خوشی ان کی خوشی میں آج کل غم نہیں ہے زندگی میں آج کل
 ان کی یادیں ان کے چرچے ہی ہر وصل رہے ہیں رقی میں آج کل
 دیکھ کر ہر سو تصور میں انہیں کٹ رہے دنِ بندگی میں آج کل
 چاند بھی شرماتا ہے رات میں کچھ کمی ہے جائزنی میں آج کل

کم سخن بھی اب سخن ور ہے مینک
 دیکھ نزمِ شاعرِ نبی میں آج کل



اُس ادا کا مقیّد ہوئیں جو ادا حکمرانی سے ہوئی

हम उन से प्यार करते हैं वो हम से प्यार करते हैं!
मगर ये भी हकीकत है बयां करने से डरते हैं!!

न पूछें आप तसवीर-ऐ-अदा कैसे बनाई है!
यकीनन रंग के बदले वफा का खून भरते हैं!!

हम उन के प्यार की बातें कहां दिल से भुलाते हैं!
जिन्हें तनहाईयों में रात दिन हम प्यार करते हैं!!

ख़ता उन की भो थी मेरी भी थी राह-ऐ-मोहब्बत में!
मगर वो बेवजह इल्जाम सारा मुझे पे धरते हैं!!

अगर हम शाद हों चेहरे फ़जाओं के उतरते हैं!
किसी से विल की बातें कब "मयंक" इज़हार करते हैं!!

□

ले के मासूमियत का नकाब!
वो नज़र अब सियानी हुई!!

□

جھوم اٹھی ناچ اٹھی موجِ گنگ و جن
 تم نے اُفت کا جب سے سکھایا چلن
 ہم بھی بازار میں یک گئے سر بسر
 جب خریدار دیکھا کوئی جانِ من
 مرنے والے کی ہے آرزو بس یہی
 سُرخ جوڑے میں آئے وہ بن کے دلہن
 سو گئے دل کے ارمان سارے مگر
 رات بھران کی بادوں میں جا گئے نین
 یہ سینک آرزو کا جہاں لٹ گیا
 پن تہسی کے لگا زندگی میں گھمن



عشقِ ناکام جب ہو گیا دُور ہر کامرانی ہوئی

झूम उठा नाच उठी मौज-ए-गंगा जमन!
तुमने उलफत का जब से सिखाया चलन!!

हम भी बाज़ार में बिक गये सर बसर
जब खरीदार देखा कोई जान-ऐ-मन!!

मरने वाले की है आरजू बस यही!
सुर्ख जोड़े में आए वो बन के दुल्हन!!

सो गए दिल के अरमान सारे मगर!
रातभर उनकी यादों में जागे नयन!!

ये "मयंक" आरजू का जहां लुट गया!
बिन किसी के लगा जिंदगी में गहन!!



इश्क़ नाकाम जब हो गया!
दूर हर कामरानी हुई!!



یقیناً آئے گا تم پہ دلِ ناکام آئے گا
ہمیں اُمید ہے اُس دن ہمیں آرام آئے گا

کبھی ٹوٹے ہوئے دل پر ترس کھائے گا وہ یارو!
یقیناً ہی مرے دل کا ترپنا کام آئے گا

لگا دیں لاکھ پہرے یہ جہاں ولے خیالوں پر
مگر لب پر تو نخواستوں میں تمہارا نام آئے گا

شبِ فرقت میں ہم یارو بدلتے ہی رہے کروٹ
کسی پہلو تو اس دل کا ترپنا کام آئے گا

مینک اُمید ہے ہم کو کہ جھوٹ میں گئے خود شی سے ہم
کسی قاصد کے ہاتھوں جب تر اپنا کام آئے گا



عشق کا راز کیا ہے مینک
ہر دفا سرگمرا نی ہوئی

यकीनन आएगा तुम पे दिले नाकाम आएगा!
हमें उम्मीद है उस दिन हमें आराभ आएगा!!

कभी टूटे हुए दिल पर तरस खाएगा वो यारो!
यकीनन ही मेरे दिल का तड़पना काम आएगा!!

लगावें लाख पहरे ये जहां वाले ख्यालों पर!
मगर लब पर तो ख्याबों में तुम्हारा नाम आएगा!!

शबे फुरकत में हम यारो बदलते ही रहे करवट!
किसी पहलू तो इस दिन का तड़पना काम आएगा!!

"मयंक" उम्मीद है हम को के झूमेंगे खुशी से हम!
किसी कासिद के हाथों जब तेरा पैगाम आएगा!!



इश्क का राज क्या है "मयंक"!
हर वफा सरगरानी हुई!!



نگاہوں میں ہرے دل میں تجھیل میں سما جاؤ
چراغِ خانہ آشفستگی بن کر کے آ جاؤ

صراحی میں مری اک آگ دل کو سرد کرتی ہے
دہی اک آگ بھر کر جام آ جاؤ، پلا جاؤ

پتہ اُس دل کا پوچھے ہے پتہ جس کا نہیں ملتا
پتہ دے دو پتہ ہم کو پتہ کوئی بتا جاؤ

کہ شکوے وہ شکایت، حسرتیں، آنسو گئے سارے
ہمیں منظور ہیں یہ سب اگر صورت دکھا جاؤ

نگاہیں منتظرانِ مست آنکھوں کی ہیں مدت سے
مینک ساتی بنے آؤ، کوئی مدیرا پلا جاؤ



وہ جو آغوش میں آگئے ہر ادا ترک مانی ہوئی

निगाहों में मेरे दिल में तख्तुल में समा जाओ!
चराग-ऐ-खान-ऐ-आशफतगी बनकर चले आओ!!

सुराही में मेरी इक आग दिल को सर्द करती है!
वही एक आग भर कर जाम आजाओ पिला जाओ!!

पता उस दिल का पूछे है पता जिसका नहीं मिलता!
पता दे दो पता हम को पता कोई बता जाओ!!

कि शिकवे वो शिकायत हसरतें आंसू गिले सारे!
हमें मंजूर हैं ये सब अगर सूरत दिखा जाओ!!

निगाहें मुन्ताज़िर उन मस्त आंखों की हैं मुदत से!
"मयंक" साकी बा! आओ कोई मदिरा पिला जाओ!!

□

वो जो आगोश में आ गये!
हर अदा तुर्क मानी हुई!!

□

تصوّر میں اگر کچھ ہے خیالِ یار ہوتا ہے
میرا ناشادِ دل اُن کے لئے بیدار ہوتا ہے

چلو چلتے ہیں منزل کو سبھلے ہی دور ہے تو کیا
بسا محرابِ دل میں وہ ترا اک دوار ہوتا ہے

ارادے ہیں سبھی اپنے بہت ہی نیک دنیا میں
نہ ہونیکی کا جو قاتل زمیں پر بار ہوتا ہے

لگے قیمتِ دلوں کی آج کل بازار میں سے یارو!
کسی کی کیا خطا نہ بھی تو اک دیو پیار ہوتا ہے

یہ کس ماحول میں لے آیا مجھ کو فوقِ دل میرا
مینگ اب سانس سبھی لینا مجھے دُشوار ہوتا ہے



چھوڑ دی ہے جفا اور ستم اب یہ عادت پُرانی ہوئی

तसव्वुर में अगर कुछ है ख्याल-ऐ-यार होता है!
मेरा नाशाद दिल उन के लिये बेदार होता है!!

चलो चलते हैं मंज़िल को भले ही दूर है तो क्या!
बसा मेहराब दिल में वो तेरा इक द्वार होता है!!

इरादे हैं सभी अपने बहुत ही नेक दुनिया में!
न हो नेकी का कायल जो ज़मीं पर बार होता है!!

लगे कीमत दिलों की आजकल बाज़ार में यारो!
किसी की क्या ख़ता ये भी तो इकव्यापार होता है!!

ये किस माहौल में ले आया मुझे ज़ोक-ऐ-दिल मेरा!
"मयंक" अब सांस भी लेना मुझे दुश्वार होता है!!

□

छोड़ दीजे जफ़ा और सितम!
अब ये आदत पुरानी हुई!!

□

میری نگاہ سے دیکھے کوئی کہ تو کیا ہے
میں کیا بتاؤں کہ اس دل میں آرزو کیا ہے

ہمارے خون کا ان پر اثر نہ کچھ سچھے ہوا
وہ ہم سے پوچھتے ہیں سُرخِ لبو کیا ہے

ہمارے پیار پہ کچھ تو یقین سے لاؤ ذرا
تمہیں بتائیں کہ اس دل کی آرزو کیا ہے

کچھ ایسا پر وہ بڑا استھامری نگاہوں پر
سمجھ میں کچھ نہ آیا کہ روبرو کیا ہے

مینک میرے ہما دم سے ہے روشنی ہر سو
میں ہی یہ سوچ رہا ہوں کہ چار سو کیا ہے



کچھ کہانی بیاں ہمانے کی کچھ تمہاری زبانانی ہوتی

मेरी निगाह से देखे कोई तू क्या है!
 में क्या बताऊं के इस दिल की आरजू क्या है!!

हमारे खून का उन पर असर न कुछ भी हुआ!
 वो हम से पूछते हैं सुखि-एं-लहू क्या है!!

हमारे प्यार का कुछ तो यकीन लाओ ज़रा!
 तुम्हें बताएँ के इस दिल की आरजू क्या है!!

कुछ ऐसा पर्दा पड़ा था मेरी निगाहों पर!
 समझ में कुछ नहीं आया के रूबरू क्या है!!

"मयंक" मेरे ही दम से है रौशनी हर सू!
 मैं ही ये सोच रहा हूँ के चार सू क्या है!!

□

कुछ कहानी बयां हमने की!
 कुछ तुम्हारी जुबानी हुई!!

□

اُسے حیات نہ کہتے کہ جس میں راحت ہو
وہ زلیلت موت سے بدتر ہے جس میں فرصت ہو

غمِ جدائی کا اک جامِ ادے انہیں ساقی
ذرا انہیں بھی تو اندازہٴ محبت ہو

وفا کی راہ میں جو کچھ ہو، ہنس کے سہہ جاؤ
کسی سے کوئی گلا ہو نہ کچھ شکایت ہو

غزل کے پردے میں حالاتِ دل سناؤں تمہیں
اگر چہ سننے کی تم کو ذرا بھی فرصت ہو

چمک مینک کی مدھم نہ بھرد کھائی دے
جو بے نقاب رُخِ یار کی زیارت ہو



دل میں شعلے ہیں اور چشمِ تر
زندگی آج پانے ہوئی

उसे हयात न कहिये के जिस में राहत हो!
वो जीस्त मौत से बदतर है जिसमें फुसर्त हो!!

ग़म में जुदाई का इक ज़ाम दे इन्हें साकी!
ज़रा उन्हें भी तो अंदाज़-ऐ-मोहब्बत हो!!

वफ़ा की राह में जो कुछ हो हंस के सह जाओ!
किसी से कोई गिला हो न कुछ शिकायत हो!!

ग़ज़ल के पर्दे में हालाते दिल सुनाऊं तुम्हें!
अगर ये सुनने की तुम को ज़रा सी फुर्सत हो!!

चमक "मयंक" की मद्यम हमें दिखाई दे!
जो बे नक़ब रूखे यार की ज़ियारत हो!!



दिल में शौले हैं और चश्में तर!
जिंदगी आज पानी हुई!!



نظر فریبِ قضا کھار ہی ہے آجاؤ حیاتِ موت سے ٹکرا رہی ہے آجاؤ

سنہری دھوپ کی چاند بچھا بیٹھے ہیں نئی سحر بھی یہ کجرا رہی ہے آجاؤ

تمہارے عشق میں مرنے کی آرزو ہے مگر قضا بھی پاس نہیں آ رہی ہے آجاؤ

گئے وہ دن کہ میں ہنستا تھا دوسری ^{لی}کھی کج خود پہ سنہری آ رہی ہے آجاؤ

زبانِ گل پہ یہی ہے صد امینک سُنو
خزاںِ صفت یہ بہار آ رہی ہے آجاؤ



زندگی اک کہانی ہوئی
بے وفا جو جوانی ہوئی

नज़र फ़रेब कज़ा खा रही है आजाओ!
हयात मौत से टकरा रही है आजाओ!!

सुनहरी धूप की चादर बिछाए बैठे हैं!
नई सहर भी ये कज़रा रही है आजाओ!!

तुम्हारे इश्क में मरने की आरजू है मगर!
कज़ा भी पास नहीं आ रही है आजाओ!!

गये वो दिन के मैं हंसता था दूसरों पे कभी!
के आज खुद पे हंसी आ रही है आजाओ!!

जुबान-ऐ-गुल पे यही है सदा "मयंक" सुनो!
खिजां सिफ़त ये बहार आ रही आजाओ!!



ज़िंदगी	इक	कहानी	हुई!
वे	वफ़ा	जो	जवानी हुई!!



کوئی ہم نفس نہیں دُور تک یہاں سانس لینا محال ہے
مرے علم کو وہ بھی نہ پاسکا مرے دل کو اسکا ملال ہے

اسی شغل میں اسی شوق میں مری عمر ساری گزر گئی
تری آرزو، تری جستجو، تیرا ذکر، تیرا خیال ہے

یہ شفیق، یہ جاندار، یہ چاندنی، یہ کلی، یہ گل، یہ شگفتگی
تجھے دوں تو کس سے مثال دوں نہیں کوئی تیری مثال،

یہ تری نگاہ کا فیض ہے یہ کمال تیری عطا کا ہے
میں وہاں ہوں اب کہ جہاں مجھے نہ عروج ہے نہ زوال ہے

تری روشنی ہے یہاں وہاں ہے زمیں تیری تیرا آسماں
ترے سامنے کوئی جم سکے یہ مینک کس کی مجال ہے



موت سے زندگی دُور جانے لگی
جب بھی کوئی کلی مُسکرائے لگی

یا وجاناں مسلسل ستانے لگی
دست گلچیں بڑھا جانے شاخِ گل

कोई हम नफस नहीं दूर तक यहां सांस लेना मुहाल है!
मेरे गम को वो भी न पा सका मेरे दिल को उसका मलाल है!!

इसी गज़ल में इसी शोक में मेरी उम्र सारी गुज़र गई!
तेरी आरजू तेरी जुस्तुजू तेरा ज़िक्र तेरा ख्याल है!!

ये शफक़ ये चांद ये चांदनी ये कली ये गुल ये शगुपतगी!
तुझे दूं तो किस से भिसाल दूं नहीं कोई तेरी भिसाल है!!

ये तेरी अदा का कमाल है ये तेरी निगाह का फ़ैज़ है!
में वहां हूं अब के जहां मुझे न उरूज है न ज़वाल है!!

तेरी रौशनी है यहां वहां है ज़मीं तेरी तेरा आसमां!
तेरे सामने कोई ज़म सके ये "मयंक" किस की मजाल है!!



याद-ऐ-जाना मुसलसल सताने लगी!
मौत से जिंदगी दूर जाने लगी!!

दस्त-ऐ-गुलचीं बढ़ा जानिब-ऐ-शाख़े गुल!
जब भी कोई कली मुसकुराने लगी!!



دشت بن کے روحِ چمن آئے پیار کی لے کے روشن کرن آئے
 آپ جان بہاراں ہیں جانِ چمن ہبک اٹھ گی یہ انجمن آئے
 تھل ہونے کو بیٹھے ہیں ہم راہ میں لے کے ناز و داد بانگین آئے
 سٹھک چُکھا ہوں بہت راہِ تھل میں دور کرنے کو میری تھکن آئے

دے رہا ہے صدا پر صدا یہ مینک
 آئے، آئے جانِ من آئے

لوگ ہنستے تھکے کل تک ہمیں دیکھ کر
 پیار سے تم نے دیکھا جو میری طرف
 اب ہنسی خود پہ ہی خود کو آنے لگی
 آرزوؤں کی میت ٹھکانے لگی

बशत में बन के रूह-ऐ-चमन आईये!
प्यार की ले के रोशन किरन आईये!!

आप जान-ए-बहारां हैं जान-ए-चमन!
महक उठेगी ये अन्जुमन आईये!!

कत्ल होने को बैठे हैं हम राह में!
लेके नाज़-ओ-अदा बांकपन आईये!!

थक चुका हूं बहुत राह-ऐ-तखईल में!
दूर करने को मेरी थकन आईये!!

दे रहा है सदा पर सदा ये "मयंक"!
आईये आईये जान-ऐ-मन आईये!!



लोग हंसते थे कल तक हमें देखकर!
अब हंसी खुद पे ही खुद को आने लगी!!

प्यार से तुमने देखा जो मेरी तरफ!
आरजू-ओं-की मध्यत ठिकाने लगी!!

کتنی حسین رات ہے کچھ بات کہئے
 کچھ سبھی نہیں تو شکوے شکایا لیجئے
 باہر نکلیے گوشہ تنہائی چھوڑیئے
 ہم سے نہ چاہے آپ ملاقات کیجئے
 بننے اور بگڑنے میں مرضی خدا کی ہے
 بر باد یوں پہ میری نہ صدا کیجئے
 ہم نے تو آنکھوں آنکھوں میں کہہ دیا مگر
 ظاہر کچھ آپ اپنے سبھی جذبہ بات کیجئے

اشعار کی زباں میں مخاطب ہے آمینک
 شعروں کی داد دیجئے کچھ بات کیجئے



شہ گوی کا لے کر سہارا امینک
 زندگی ایک نیا گیت گانے لگی

اب چین میں کہیں سبھی ٹھکانہ نہیں
 چار تنکوں کا سبھی آشیانہ نہیں

कितनी हसीन रात है कुछ बात कीजिये!
कुछ भी नहीं तो शिकवा शिकायात कीजिये!!

बाहर निकलये गोश-ऐ-तन्हाई छोड़िये!
हम से न चाहे आप मुलाकात कीजिये!!

बनने और बिगड़ने में मर्जी खुदा की है!
बरबादियों पे मेरी न सदमात कीजिये!!

हमने तो आंखों आंखों में सब कह दिया मगर!
ज़ाहिर कुछ आप अपने भी जज़्बात कीजिये!!

अशआर की जुबां में मुख़ातिब है अब "मयंक"!
शेरों की दाद दीजिये कुछ बात कीजिये!!



शैर गोई का लेकर सहारा "मयंक"!
जिंदगी इक नया गीत गाने लगी!!



अब चमन में कहीं भी ठिकाना नहीं!
चार तिनको का भी आशियाना नहीं!!



جس گھڑی مجھ سے تم ہو رہے تھے جدا اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم
سرا سر تھی میری ہر نظر التجاء اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم

بے کسی دیکھ کر میری روئے تھے تم اور ڈھارس بھی تم نے بندھائی مگر
جب ترپ کر مرے دل نے دی تھی جدا اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم

دیکھ کر وہ میری حالت پر جنوں لٹ گیا تھا تمہارا جہاں مسکوں
یاد آیا تھا تم کو سبھی غم و وفا اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم

بعد مدت کے ہم تم طے ایک شام اور شکوے شکایت میں شب کٹ گئی
ہونہ پائی صلح آفتاب آ گیا اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم

تھی خوشی کی خوشی اور نہ تھا غم کا غم وہ زمانہ بھی تھا کیا زمانہ صنہ
زندگانی مینک اپنی تھی پھر فضاء اس گھڑی کو ذرا یاد کر لینا تم



کیا سچے کامیاب آشیانہ یہاں بچیلوں میں میرا دوستانہ نہیں
اس مسلسل خموشی کے پس میں بھی اک حقیقت ہے پارو فسانہ نہیں

जिस घड़ी मुझ से तुम हो रहे थे ज़रा उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!
सर बसर भी मेरी हर नज़र झलितजा उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!!

बेकसी देख कर मेरी रोएँ ये तुम और द्वाइस भी तुम ने बंधाई मगर!
जब तड़प कर मेरे दिल ने दी थी सदा उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!!

देख कर वो मेरी हातत-ऐ-पुट जुनु लुट गया था तुम्हारा जहाने सुक!
याद आया था तुम को भी एहव-ऐ-बफा उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!!

बाद मुह्रत के हम तुम मिले एक शाम और शिकवे शिकायत में शब कट गई!
हो न पाई सबह आफताब आ गया उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!!

थी खुशी की खुशी और न था गुम वो ज़माना भी क्या था ज़माना सनम!
जिंदगानी "मयंक" अपनी थी पुरफ़िज़ां उस घड़ी को ज़रा याद कर लेना तुम!!



क्या बचेगा मेरा आशियाना यहाँ!
बिजलियों से मेरा दोस्ताना नहीं!!

इस मुसलसल ख़ामोशी के पर्दे में भी!
इक हकीकत है यारो फ़साना नहीं!!



بزمِ اعدا میں جب جب سبھی جائیں گے ہم
 نازِ مجبور یوں میں اٹھائیں گے ہم
 یہ سبھی فصلِ بہاراں کی توہین سے
 ہو کے عملگیں اگر نہ کرائیں گے ہم
 ہو کے بے پردہ تم بامِ پر آؤ تو
 اپنا طرفِ نظر آزمائیں گے ہم
 سجدہ کرنا یہاں کفر سے کم نہیں
 جانتے ہیں مگر سر جھکا لیں گے ہم

اب اماؤس کی راتوں کا غم کیا مینک
 روشنی اُن کے رخ سے جو پائیں گے ہم



وہ ہی موسم ہے لیکن سہانا نہیں
 گو میرے ساتھ سارا زمانہ نہیں

تو نہیں تو سارے منتظر ہیں اداؤس
 میرا سایہ تو ہے ہم سفر اے مینک

बज़्म-ए-अदा में जब जब भी जाएँगे हम!
नाज़ मजबूरियों में उठायेंगे हम!!

ये भी फ़स्ल-ए-बहारा की तौहीन है!
हो के ग़मगी अगर मुस्कुराएँगे हम!!

हो के वे पर्दा तुम बाम पर आओतो!
अपना जर्फ़-ए-नज़र आजमाएँगे हम!!

सजदा करना यहां कुफ़्र से कम नहीं!
जानते हैं मगर सर झुकाएँगे हम!!

अब अमावस की रातों का ग़म क्या "मयंक"!
रौशनी उन के रूख़ से जो पाएँगे हम!!



तू नहीं है तो मन्ज़र हैं सारे उदास!
वो ही मौसम है लेकिन सुहाना नहीं!!

मेरा साया तो है हम सफ़र ए "मयंक"!
गो भेरे साथ सारा ज़माना नहीं!!



جب چلے ہم جھکا کے سر اپنا ذرہ ذرہ تھا ہم سفر اپنا
 اُس کے سینے پہ میرا سر اپنا دے گیا درد چارہ گر اپنا
 ہم سفر تھا نہ کوئی رہ میرا تھا عمر کے سخت موڑ پر اپنا
 آ کے ہماں ہو اجوز ہرہ جبیں جگ مگا اٹھا آج گھر اپنا
 مر کے ہو جائیں گے امر ہم بھی نکلا اس در پہ دم اگر اپنا

ناز کس پر کریں مینک کہو
 اب تو دل ہے نہ یہ جگ اپنا



تم ملے تو سہارا ملا
 ڈوبتے کو کنارہ ملا

जब चले हम झुका के सर अपना!
जर्ज़र-जर्ज़र था हम सफ़र अपना!!

उस के सीने पे मेरा सर अपना!
दे गया दर्द चारा गर अपना!!

हम सफ़र था न कोई रहबर था!
आ के महमां हुआ जो जोहरा जर्बी!
जग मगा उठ आज घर अपना!!

मर के हो जाएंगे अमर हम भी!
निकला उस दर पे दम अगर अपना!!

नाज़ किस पर करे "मयंक" कहो!
अब ती दिल है न ये जिगर अपना!!

□

तुम मिले तो सहारा मिला!
डूबते को किनारा मिला!!

□

چاہت ہر ایک نے دی تیری چاہت کے ساتھ ساتھ
عزت سچی بڑھ گئی مری شہرت کے ساتھ ساتھ

دنیا کے سب ادیبوں کا پیغام ایک ہے
خدمت کا شوق سچی ہو محبت کے ساتھ ساتھ

کیا آنکھ مجھ سے گردشِ دوراں ملائے گی
ہمت سے کام لیتا ہوں جہرات کے ساتھ ساتھ

کلیوں پہ اک برف سی گری گلِ ترے گئے
انگڑائی کی جب اُس نے نزاکت تم کے ساتھ ساتھ

پڑھ کر تو دیکھے ذرا غزلیں میناک کی
کچھ عرضِ حال سبھی ہے شکایت کے ساتھ ساتھ



اک ترے پتا ستارہ ملا
آپ کا جو اشارہ ملا

تم جو روئے تو ہر شک میں
اپنی ہستی مٹا دیں گے ہم

चाहत हर इक ने दी तेरी चाहत के साथ साथ!
इज़्जत भी बढ़ गई मेरी शोहरत के साथ साथ!!

दुनिया के सब अदीबों का पैग़ाम एक है!
खिदमत का शौक भी हो मोहब्बत के साथ साथ!!

क्या आंख मुझ से गर्दिशे दौरा मिलाएगी!
हिम्मत से काम लेता हूँ जुअर्त के साथ साथ!!

कलियों पे एक बर्फ़ गिरी गुल तड़प गये!
अंगड़ाई ली जब उसने नज़ाकत के साथ साथ!!

पढ़ कर तो देखिये ज़रा गुज़ले "मयंक" की!
कुछ अर्ज-ऐ-हाल भी है शिकायत के साथ साथ!!

□

तुम जो रोए तो हर अश्क में!
इक तड़पता सितारा मिला!!

अपनी हस्ती मिटा देंगे हम!
आप का जो इशारा मिला!!

□

ڈوب جائیں ڈوب جانے دیجئے اک نیا طوفان آنے دیجئے

منفرتوں کے سانزیکھے ہیں تو کیا پیار کا نغمہ سنانے دیجئے

ہر ستم ہے آپ کا ہم کو قبول چاہ منفرت کے بہانے دیجئے

کسنی میں کیوں سنوڑتے ہو حضور پیار کا موسم تو آنے دیجئے

جیب تلک آنکھوں سے پیتا ہے مینک
چاندنی کو جگمگانے دیجئے



پیار مجھ کو تمہارا ملا
دل نہ اب تک ہمارا ملا

خوش نصیبی ہے میری صنم
ہا سٹھ تو روز ملتے رہے

वफ़ा जो शीश महल में सजाए बैठे हैं!
 वो दिल को संग नुमा क्यों बनाए बैठे हैं!!

कोई खुशी नहीं इस जिंदगी से वा बस्ता!
 लबों पे फिर भी तबस्सुम सजाए बैठे हैं!!

अज़ल से एक बुत-ऐ-बे वफ़ाई की राहों में!
 चराग़ अपनी वफ़ा का जलाए बैठे हैं!!

जो तीर आप ने तिरछी नज़र का मारा था!
 उसी के जीस्त का हासिल बनाए बैठे हैं!!

वो जिसने कत्ल किया हम को ऐ "मयंक" सुनो!
 उसी के दर्द को दरमां बनाए बैठे हैं!!

□

याद है उस हंसी शाम का!
 वो समां प्यारा प्यारा मुझे!!

करके महरूम-ऐ-तीरे नज़र!
 कर दिया हे सहारा मुझे!!

□

یا وجو تیری آئی تو میری آنکھ وہیں بھرا آئی ہے
 ضبط نہ کر پایا تو میری اور تیری رسوائی ہے

تیرے پیار کی قلدل میری جان ہی لے کر چھوڑ گئی
 ڈوبتا جاتا ہے دل میرا یہ کیسی گہرائی ہے

اب تو ہجر یار میں میرا حال ہوا ہے یہ پار و
 سنے ہیں آنکھوں میں میری لیکن نیند پرانی ہے

تار گننا، آنسو پینا، شب بھر آہ و بکا کرنا
 اے میرے دل تو نے بھی کیا خوب ہی قسمت پائی ہے

سوچ سمجھ کر آنکھ ملانا حسن کی شہزادی سے مینک
 نیلی نیلی ان آنکھوں میں جھیلوں سی گہرائی ہے



ہر حکمتا ستارہ مجھے
 ٹوٹ کر اک ستارہ مجھے

دے گیا آسماں کی خبر
 دے گیا آج درسِ فنا

याद जो तेरी आई तो मेरी आंख वहीं भर आई है!
जब्त न कर पाया तो मेरी और तेरी रूसवाई है!!

तेरे प्यार की दल दल मेरी जान ही लेकर छोड़ेगी!
डूबता जाता है दिल मेरा ये कैसी गहराई है!!

अब तो हिज-ऐ-यार में मेरा हाल हुआ है ये यारो!
सपने हैं आंखों में मेरी लेकिन नींद पराई है!!

तारे गिनना आंसू पीना शब भर आहो बुका करना!
ऐ मेरे दिल तूने भी क्या खूब ही किसमत पाई है!!

सोच समझ कर आंख मिलाना हुस्न की शहजादी से 'मयंक'!
नीली नीली इन आंखों में झीलों सी गहराई है!!



दे गया आशियां की ख़बर!
हर चमकता सितारा मुझे!!

दे गया आज दर्स-ए-फना!
टूट कर इक सितारा मुझे!!



کیسے کہہ دوں کہ تم سے محبت نہیں
 جھوٹے لبوں تو یہ میری عاد نہیں
 تذکرے رنج و غم کے سننے اس قدر
 اب مجھے درسی غم کی ضرورت نہیں
 جو مقدر میں لکھا تھا وہ ہو گیا
 آپ سے کوئی شکوہ شکایت نہیں
 جانے کیوں پھر اسی سے مخاطب ہے دل
 حالِ دل جسکو سننے کی فرصت نہیں

بواہو سہا ہے وہ عاشق نہیں ہے مینک
 یار کے ذکر سے جس کو رعیت نہیں



آج کچھ کچھ حجاب آیا ہے
 میرا غلط آج بڑھتے ہوئے
 ان یہ دور شباب آیا ہے
 ان کو یار و حجاب آیا ہے

कैसे कह दूँ के तुम से मोहब्बत नहीं!
 झूठ बोलूँ तो यह मेरी आदत नहीं!!

तज़किरे रंज-ओ-ग़म के सुने इस कदर!
 अब मुझे दर्से ग़म की ज़रूरत नहीं!!

जो मुकदर में लिखा था वो हो गया!
 आप से कोई शिकवा शिकायत नहीं!!

जाने क्यों फिर उसी से मुखातिब है दिल!
 हाल-ऐ-दिल जिस को सुनने की फुसर्त नहीं!!

बुल हवस है वो आशिक नहीं है "मयंक"!
 यार के ज़िक्र से जिस को रणबत नहीं!!



आज कुछ कुछ हिजाल आया है!
 उन पे दौर-ए-शबाब आया है!!

मेरा ख़त आज पढ़ते हुए!
 उन को यारो हिजाब आया है!!



جب جب جین اُجڑ گیا ویرالتے ہو گیا
 آغم ہی میری زلیلت کا سالکے ہو گیا

تم آگئے جو غیر کے ہمراہ بے نقاب
 پورا ہمارے دل کا یہ ارمانے ہو گیا

دیکھا جو تم نے پیار سے اک بار اس طرح
 ہر مرحلہ حیات کا آسانے ہو گیا

اب اس سے اور شکوہ بیداد کیا کریں
 اپنے کئے پہ خود جو پشیمانے ہو گیا

اے جانِ زندگی تیرا اندازِ دلے رُبا
 میرے لئے تو دشمنِ ایمانے ہو گیا

کس کس سے بے وفائی کا شکوہ کرے مینک
 مطلب پرست آج ہر انسانے ہو گیا



عشق میں یہ خطاب آگیا

لوگ دیوانہ کہنے لگے

जब जब चमन उजड़ गया वीरान हो गया!
तो गम ही मेरी जीस्त का सामान हो गया!!

तुम आ गये जो गैर के हम राह बे नकाब!
पूरा हमारे दिल का ये अरमान हो गया!!

देखा जो तुमने प्यार से इक बार इस तरह!
हर मरहला हयात का आसान हो गया!!

अब उस से और शिकव-ऐ-बेदाद क्या करें!
अपने किये ये खुद जो पशेमान हो गया!!

ऐ-जान-ऐ-जिंदगी तेरा अंदाज़-ए-दिल रूबा!
मेरे लिये तू दुश्मन-ऐ-ईमान हो गया!!

किस किस से बे वफ़ाई का शिकवा करें "मयंक"!
मतलब परस्त आज हर इनसान हो गया!!

□

लोग दीवाना कहने लगे!
इश्क में ये ख़िताब आया है!!

□

آج یوں آتشِ دل بجھائیں گے ہم
وہ منائیں گے تو رُونُٹھ جائیں گے ہم

گلشنِ آرزو کے تمہیں پھولے ہو
اپنا جھولنے تمہیں سے سجائیں گے ہم

حجی اُسٹھیں گے سبھی مُردہ دل نیک بیک
گہیت جب زندگی کا سنائیں گے ہم

وقت آیا تو اس دِیس کے واسطے
خود ہی اپنے لہو سے نہائیں گے ہم

جب اندھرا بڑھے گا جہاں میں مینک
روشنی کے لئے دلِ جلائیں گے ہم



غم کا سامان ہونے لگا
گُفرا ایمان ہونے لگا

دل جو دیران ہونے لگا
التَّوْبَةُ شَانِ حَرَمِ

आज यूँ आतिश-ऐ-दिल बुझाएँगे हम!
 वो मनाएँगे तो रूठ जायेंगे हम!!

गुलशन-ऐ-आरजू के तुम्हीं फूल हो!
 अपना जीवन तुम्हीं से सजाएँगे हम!!

जी उठेंगे सभी मुर्दा दिल एक वयक!
 गीत जब ज़िंदगी का सुनाएँगे हम!!

वक़्त आया तो इस देश के वास्ते!
 खुद ही अपने लहू से नहाएँगे हम!!

जब अंधेरा बढ़ेगा जहां में "मयंक"!
 रौशनी के लिये दिल जलाएँगे हम!!



दिल जो वीरान होने लगा!
 ग़म का सामान होने लगा!!

अल्ला अल्ला ये शान-ऐ-हरम!
 कुफ़्र ईमान होने लगा!!



اک اک لمحہ مجھے تڑپائے گا یاد جب گزرے زمانہ آئے گا
 ان خیالوں کو نہ دل میں لائینگے جن خیالوں میں نہ کوئی آئے گا
 یاد تنہائی میں جب جب آؤ گے دردِ دل کا اور بڑھتا جائے گا
 ایسا لگتا ہے کہ ہجر یار میں اب غمِ دل جان لے کر جا چکا

جانِ نبی اپنی لٹا دیں گے منک
 تو تصور میں اگر آجائے گا



بے پیچے جو نہ انسان سمجھا پی کے انسان ہونے لگا
 دل یہ میرا محبت سے اب اُن پہ قربان ہونے لگا

इक इक लम्हा मुझे तड़पाएगा!
याद जब गुज़रा ज़माना आएगा!!

उन ख्यालों को न दिल में लाएँगे!
जिन ख्यालों में न कोई आएगा!!

याद तन्हाई में जब जब आओगे!
दर्द दिल का और बढ़ता जाएगा!!

ऐसा लगता है के हिज़-ऐ-यार में!
अब ग़म-ऐ-दिल जान लेकर जाएगा!!

चांदनी अपनी लुटा देगा "मयंक"!
तू तसव्वुर में अगर आजाएगा!!

□

बे पिये जो न इनसान था!
पी.के इनसान होने लगा!!

दिल ये मेरा मोहब्बत से अब!
उन पे कुरबान होने लगा!!

□

ذرا بہکنے دے ارمان تو نکلنے دے
نہ دے سہارا مجھے دگمگا کے چلنے دے

اٹھا دے اپنے رخ پر جمال سے پردہ
اندھیری رات ہے اب چاند کو نکلنے دے

یہ دھوپ چھاؤں میری زندگی کا حال ہے
سیاہ زلف کو رخسار پہ مچلنے دے

سحر قریب ہے لیکن میں ناامید نہیں سے
ضرور آئیں گے وہ دل کے داغ بننے دے

مستوں کی حسیں چاندنی کھلے گی مینک
غم حیات کا یہ آفتاب ڈھلنے دے



رُوبرو آفتاب آگیا
میں پریشان ہونے لگا

تم جو آئے تو بولا مینک
روشنی پا کے خود آئے مینک

ज़रा बहकने दे अरमान तो निकलने दे!
न दे सहारा मुझे उगमगा के चलने दे!!

उठ दे अपने रूखे पुर जमाल से पर्दा!
अंधेरी रात है अब चांद को निकलने दे!!

ये धूप छांव मेरी जिंदगी का हासिल है!
सियाह जुल्फ को रूखसार पे मचलने दे!!

सहर करीब है लेकिन मैं ना उमीद नहीं!
ज़रूर आएंगे वो दिल के दाग जलने दे!!

मसरतों की हंसी चांदनी हंसेगी "मयंक"!
गमे हयात का ये आफ़ताब ढलने दे!!

□

तुम जो आए तो बोला "मयंक"!
रू-ब-रू आफ़ताब आ गया!!

रौशनी पाके खुद ए "मयंक"!
मैं परेशान होने लगा!!

□

اب کوئی غم گسار کیا ہوگا اب میسّر قرار کیا ہوگا

ہم تیرے ہو کے سبھی نہیں تیرے اس سے بڑھ کر وقار کیا ہوگا

غرق ہے اشکِ غم میں برقی رواں زخمِ دل کا شمار کیا ہوگا

ہیں وطن میں سبھی بے وطن کی طرح کوئی یوں بے دیا کیا ہوگا

فصل گل آئی سبھی گئی سبھی مینک
داغ اب تار تار کیا ہوگا



جب محفل میں جانا ہوگا حالِ میرا بندانہ ہوگا
جو تم سے بے گانہ ہوگا پاگل یا دیوانہ ہوگا

अब कोई ग़म गुसार क्या होगा!
अब मयस्सर करार क्या होगा!!

हम तेरे हो के भी नहीं तेरे!
इस से बढ़कर वकार क्या होगा!!

ग़र्क है अशके ग़म में बर्क-ऐ-रवां!
जख़्म दिल का शुमार क्या होगा!!

हैं वतन में भी बे वतन की तरह!
कोई यूँ बे दयार क्या होगा!
फ़स्ल-ऐ-गुल आई भी गई भी "मयंक".
दामन अब तार तार क्या होगा!!



जब महफ़िल में जाना होगा!
हाल मेरा रिन्दाना होगा!!

जो तुम से बे गाना होगा!
पागल या दीवाना होगा!!



یوں نہ دامن بچائیے صاحب
 پاس ہمارے بھی آئیے صاحب
 آپ کو دیکھ کر جو جیتتا ہے
 دُور اس سے نہ جاتیے صاحب
 اب وہ فرست وہ جذبہٴ عشق کہا
 جو ہوا بھول جاتیے صاحب
 کھل اُٹھے گا ہمارا گلشنِ دل
 اک ذرا مسکرائیے صاحب
 زخم کھانے کی ہے مجھے عادت
 مجھ کو سبھی آزمائیے صاحب

پڑھ کے اپنے مینک کی غزلیں
 آج تو جمو آ جاتیے صاحب



یہاں ہمیشہ کولتے رہے گا
 آئیے قضا اور جانا ہوگا

यूं दामन बचाईये साहिब!
पास हमारे भी आईये साहिब!!

आप को देख कर जो जीता है!
दूर उस से न जाईये साहिब!!

अब तो फुर्सत वो जज्बा-ए-इश्क कहां!
जो हुआ भूल जाईये साहिब!!

खिल उठेगा हमारा गुलशन-ऐ-दिल!
इक ज़रा मुस्कराईये साहिब!!

जड़म खाने की है मुझे आदत!
मज को भी आजमाई ये साहिब!!

पढ़के अपने "मयंक" की गज़लें!
आज तो झूम जाईये साहिब!!



यहां हमेशा कौन रहेगा!
आई कज़ा और जाना होगा!!



جو دل کا تھا سکون وہ حالت کہاں گئی
مقصد تھا زندگی کا وہ چاہت کہاں گئی

میں خود یہ سوچتا ہوں تجھ دیکھنے کے بعد
شکلوں کا کیا ہوا وہ شکایت کہاں گئی

تم میرے پیار میں کبھی روتے تھے رات دن
آغازِ عشق میں جو تھی حالت کہاں گئی

اب تو شرارتوں پہ خموشی ہے شرم سے
غصے میں کوسنے کی وہ عادت کہاں گئی

کل تک مینک سے سبھی ملاتے نہ تھے نظر
اب وہ حیا و ناز نزاکت کہاں گئی



سارا جگ ویرانہ ہو گا
بہتر تو مرجانا ہو گا

پیار اٹھ جا جو اس دنیا سے
کیسے دور رہیں ہم تم سے

जो दिल का था सुकून वो हालत कहां गई!
मकसद थी जिंदगी का वो चाहत कहां गई!!

मैं खुद ये सोचता हूं तुम्हें देखने के बाद!
शिकवों का क्या हुआ वो शिकायत कहां गई!!

तुम मेरे प्यार में कभी रोते थे रात दिन!
आगाज़-ए-इश्क में जो थी हालत कहां गई!!

अब तो शरारतों पे खमोशी है शर्म है!
गुस्से में कोसने की वो आदत कहां गई!!

कल तक "तय्यक" से भी मिलाते न थे नज़र!
अब वो हया वो नाज़-ओ-नज़ाकत कहां गई!!



प्यार उख जो इस दुनिया से!
सारा जग वीराना होगा!!

कैसे दूर रहें हम उन से!
बहतर तो मर जाना होगा!!



سامنے رہ کے پردہ کریں اور سچر مجھ کو ڈھونڈ کر لیں
 جب تمنا پوری ہوتی ہم سب لاکھیا تمنا کریں
 وہ اُسٹھانے کو اپنا نقاب کاش ہم سے تقاضہ کریں
 آپ دل کو چیرا کر مرے میری حالت کو دیکھا کریں

جب خبر سبھی نہ لیں وہ مینک
 کہتے ایسے میں ہم کیا کریں



دل پر لیشاں ہے کیا کیجئے
 رسم مجھ پر ذرا کیجئے

کوئی دل کی دوا کیجئے
 آج بھی جا رہے آنکھ میں دم

सामने रह के पर्दा करें!
और फिर मुझ को दूँढा करें!!

जब तमन्ना न पूरी हुई!
हम भला क्या तमन्ना करें!!

वो उठने को अपना नकाब!
काश हम से तकाजा करें!!

आप दिल को चुरा कर मेरे!
मेरी हालत को देखा करें!!

जब खबर भी न लें वो "मयंक"!
कहिये ऐसे में हम क्या करें!!

□

कोई दिल की दवा कीजिये!
दिल परेशां है क्या कीजिये!!

आ भी जाओ है आंखों में दम!
रहम मुझ पर ज़रा कीजिये!!

□

آب اُن کی ہر خوشی میں ہی خوشی ہے
 بڑی خوش حال اپنی زندگی ہے

جو اُن کی یاد میں گزرا ہے اے دل
 وہی ایک لمحہ سب سے قیمتی ہے

ستارے چاند سب ہی غم زدہ ہیں
 کہ پھیلکی پھیلکی اب کی چاندنی ہے

چلے آؤ چلے آؤ فرار اتم
 میری جان دل کی یہ محفل سجی ہے

میرے دل سے اَلَم کا اے مینک آب
 یقیناً اتحادِ باہم ہے



اُن کے حق میں دعا کیجئے
 رنج و افسوس کیا کیجئے

یہ جہاں چھوڑ کر جو گئے
 عشق تو ہو گیا کیا کریں

अब उन की हर खुशी में ही खुशी है!
बड़ी खुश हाल अपनी जिंदगी है!!

जो उन की याद में गुज़रा है ऐ दिल!
वही इक लम्हा सब से कीमती है!!

सितारे चांद सब ही गुम ज़दा हैं!
कि फीकी फीकी अब की चांदनी हैं!!

चले आओ चले आओ ज़रा तुम!
मेरी जां दिल की ये महफ़िल सजी है!!

मेरे दिल से अलम का ऐ "मयंक" अब!
यकीनन इत्तेहाबे बाहमी है!!



ये जहां छोड़ कर जो गये!
उन के हक में दुआ कीजिये!!

इश्क तो हो गया क्या करें!
रंज-ओ-अफ़सोस क्या कीजिये!!



جب سے اُن پہ شباب آگیا زلیست میں انقلاب آگیا
 دل پہ بجلی ہمارے گری جب کوئی بے نقاب آگیا
 قاصد آیا تو اے لگا جیسے اُن کا جواب آگیا
 ہر کلی شرم سے جھک گئی جب کسی کو حجاب آگیا

نفرتیں بھی بڑھی تھیں سے مینک
 پیار بھی بے حساب آگیا



دل میں شعلے ہیں اپنے مینک
 اور ان پر ہوا کیجئے

जब से उन पे शबाब आ गया!
जीसत में इन्क़लाब आ गया!!

दिल पे बिजली हमारे गिरी!
जब कोई बे नकाब आ गया!!

कासिब आया तो ऐसा लगा!
जैसे उन का जवाब आ गया!!

हर कली शर्म से झुक गई!
जब किसी को हिजाब आ गया!!

नफ़रतें भी बढ़ी थी "मयंक"!
प्यार भी बे हिसाब आ गया!!

□

दिल में शोले हैं अपने "मयंक"!
और इन पर हवा कीजिये!!

□

ہے مخلو میں بشر آب کہاں پیار کی وہ نظر آب کہاں
 جیب سے دشمن ہوا آسماں پیار کی رہ گزر آب کہاں
 زندگی سبھ تر پتے رہے ہم کو دوزخ کا ڈر آب کہاں
 جس کے دیوار و درتھے ہیں وہ میسر ہے گھر آب کہاں

جو وطن کے لئے کٹ سکے
 ہے مینک ابسا سر آب کہاں



مسافر گیت گاتا جا نوشی سے مسکراتا جا
 یہی ہے زندگی پیارے تو ہنستا جا ہنساتا جا

है खुलूसे बशर अब कहां!
प्यार की वो नज़र अब कहां!!

जब से दुश्मन हुआ आसमां!
प्यार की रह गुज़र अब कहां!!
जिंदगी भर तड़पते रहे!
हम को दोड़ख का डर अब कहां!!

जिस के दीवार-ओ-दर थे हंसीं!
वो मयस्यर है घर अब कहां!!

जो बतन के लिये कट सके!
है "मयंक" ऐसा सर अब कहां!!

□

मुसाफिर गीत गाता जा!
खुशी से मुस्कराता जा!!

यही है जिंदगी प्यारे!
तू हंसता जा हंसाता जा!!

□

دین ہمارے سنورنے لگے پیار ہم سے وہ کرنے لگے
 یہ جہاں ڈوب کر رہ گیا عشق میں ہم اسبھرنے لگے
 مدتوں تک خفا جو رہے بات الفت کی کرنے لگے
 دیکھ کر میرا حال جنوں سنگ بھی آہیں بھرنے لگے

کس کی آمد ہے جو آئے منک
 آج تم یوں سنورنے لگے



تجھے مل جائے گارستہ قدم آگے پڑھاتا جا
 تو قدموں کے نشاں پیارے بنا تا جا مٹاتا جا

दिन हमारे संवरने लगे!
 प्यार हम से वो करने लगे!!

ये जहां डूब कर रह गया!
 इश्क में हम उभरने लगे!!

मुहूर्तों तक ख़फ़ा जो रहे!
 बात उलफ़त की करने लगे!!

देख कर मेरा हाल-ए-जुनूं!
 संग भी आहें भरने लगे!!

किस की आमद है जो ए "मयंक"!
 आज तुम यूँ संवरने लगे!!

□

तुझे मिल जाएगा रस्ता!
 कदम आगे बढ़ता जा!!

तू कदमों के निशां प्यारे!
 बनाता जा मिटाता जा!!

□

ہم جو مفرد رہتے گئے ہم سے وہ دُور ہوتے گئے

جب ہوئے مُلتفت وہ ذرا لوگ مسرور ہوتے گئے

وہ میرے پاس آئے کبھی اور کبھی دُور ہوتے گئے

ساتھ اپنے تھیں رسوائیاں پھر کبھی مشہور ہوتے گئے

اُن کی نظروں کے ہم پر بینک
دار بھر پور ہونے گئے

بے وفا جو جوانی ہوئی
زندگی آج پالنے ہوئی

زندگی اک کہانی ہوئی
دل میں شعلے ہیں اور چشم تر

हम जो मगरूर होते गये!
हम से वो दूर होते गये!!

जब हुऐ मुलताफ़ित वो ज़रा!
लोग मसरूर होते गये!!

वो मेरे पास आऐ कभी!
और कभी दूर होते गये!!

साथ अपने थीं रूसवाईयां!
फिर भी मशहूर होते गये!!

उन की नज़रों के हम पर "मयंक"!
वार भरपूर होते गये!!

□

ज़िंदगी इक कहानी हुई!
बे वफ़ा जो जवानी हुई!!

दिल में शोले हैं और चश्मेतर!
ज़िंदगी आज पानी हुई!!

□

وہ میرے پاس آتے جا رہے ہیں نظر لیکن جھکاتے جا رہے ہیں
 وفاؤں کا یقین مجھ کو دلا کر میرے دل کو بھجاتے جا رہے ہیں
 جو نظریں پھیر کر جاتے تھم سے وہ نظروں میں سماتے جا رہے ہیں
 دوپٹہ انگلیوں پر وہ لپیٹ جیسے سر جھکاتے جا رہے ہیں
 دبا کر سوتلے انتوں میں وہ اپنے ذرا سا مسکراتے جا رہے ہیں

وہ اپنی دُھن میں آنکھیں بند کر کے
 سینک کچھ گنگناتے جا رہے ہیں



کچھ کہانی بیاں ہم نے کہے
 کچھ تمہارا کاربانے ہوئی

ज़रफ़ की मीज़ान पे हर दोस्त पहचाना गया!
 वो ज़रा सी बात पे रूठे तो याराना गया!!

हम जो उन की बज़्म में रूसबा हुऐ और चल दिये!
 खुश हुऐ कहने लगे अच्छ है दीवाना गया!!

लोग दिल की बात से हम को न पहचाने कभी!
 बस फटे हालाँ से ही आशिक को पहचाना गया!!

है जुनू इतना तेरी अलफ़त में जाने जां के में!
 देखने सूरत को तेरी आज बुत ख़ाना गया!!

कर दे तू फ़ितरत से रौशन ये जहाँ सारा "मयंक"!
 चांद अपनी रौशनी से ही तो पहचाना गया!!

□

आरजू है "मयंक" की ये ही!
 वो मेरे सामने रहें हर सू!!

□

تیرے در پہ ہم نے جو سر کو جھکایا بنانا تگر اپنی مرادوں کو پایا
 ملی ہم کو منزل سیر راہ چلتے تری رحمتوں کو سدا ساتھ پایا
 بہت تم دیئے ہیں زمانے نے مجھ کو مگر آنکھ میں میری آنسو نہ آیا
 تجھ میں نے ہر حال میں دل چاہا مگر بے وفا تو نے مجھ کو رلایا

تیرے واسطے میں نے ہستی مٹا دی
 مینک کہ مگر تو نہ پہچانے پایا



جھوٹے دیکھے جفا اور ستم اب یہ عادت پڑانی ہوئی
 وہ جو آغوش میں آگے ہر ادا تر کھانی ہوئی

तेरे दर पे हमने जो सर को झुकाया!
बिना मांगे अपनी मुरादों को पाया!!

मिली हम को मंज़िल सरे राह मंज़िल!
तेरी रहमतों को सदा साथ पाया!!

बहुत ग़म दिये हैं ज़माने ने मुझ को!
मगर आंख में मेरी आंसू न आया!!

तुझे मैंने हर हाल में दिल से चाहा!
मगर बे वफ़ा तूने मुझ को रूलाया!!

तेरे वास्ते मैंने हस्ती मिटादी!
"मयंक" को मगर तू न पहचान पाया!!

□

छोड़ दीजिए जफ़ा और सितम!
अब ये आदत पुरानी हुई!!

वो जो आग़ोश में आ गये!
हर अदा तुर्क मानी हुई!!

□

برستے ہیں جو شعلے آسماں سے
 طے انسان کو راحت کہاں سے
 اُسبھر کے آگیا ہے آب لبوں تک
 ہر ایک جذبہ دلوں کے درمیاں سے
 مرے دما سے چین کی آبرو ہے
 کلی کہتی ہے منہں کر باغباں سے
 عمو کی بات جانے دیکھئے آب
 طے ہیں زخم ہم کو مہر باں سے

مینک آب ہوتی ہم نے سچائے ہیں
 بہت کھا ہیں دھوکے راز دالے سے

عشق کا راز کیا ہے مینک
 ہر طرف اسرگرانی ہوئی

دیکھئے بن سنور کے مینک
 لے کے فصل بہار آگیا

बरसते हैं जो शोले आसमा से!
मिले इनसान को राहत कहा से!!

उभर के आ गया है अब लवों तक!
हर इक जज्बा दिलों के दमिया से!!

मेरे दम से चमन की आबरू है!
कली कहती है हंस कर बागबां से!!

उदू की बात जाने दीजिये अब!
मिले हैं जख्म हम को महरबां से!!

"मयंक" अब होंठ हमने सी लिये हैं!
बहुत खाए हैं धोके राज दां से!!



इश्क का राज क्या है "मयंक"!
हर वफा सर गरानी हुई!!



देखिये बन संवर के "मयंक"!
ले के फूल-ए-बहार आ गया!!



وہ جو ہنس ہنس کے ملا کرتے ہیں جانے کیوں لوگ جلا کرتے ہیں

کچھ وفا سے جنہیں مطلب بھی نہیں بے وفائی کا گلا کرتے ہیں

دیکھ کر ہم کو زمانے والے اپنے ہاتھوں کو ملا کرتے ہیں

جن کو ہم سے نہیں کوئی مطلب کیوں اشارے وہ کیا کرتے ہیں

اب کہاں ہیں وہ مسیحا آئے مینک
دردِ دل کی جو دوا کرتے ہیں



عشقِ ناکام جب ہو گیا دُور ہر کامِ سرائی ہوئی
لے کے دو شیزگی کا نقاب وہ نظر اب سیانی ہوئی

गो जो हंस हंस के मिला करते हैं!
जाने क्यूं लोग जला करते हैं!!

कुछ वफ़ा से जिन्हें मतलब ही नहीं!
बे वफ़ाई का गिला करते हैं!!

देख कर हम को ज़माने वाले!
अपने हाथों को मला करते हैं!!

जिन को हम से नहीं कोई निसबत!
क्यों इशारे वो किया करते हैं!!

अब कहां हैं वो मसीहा ऐ "मयंक"!
दर्द-ए-दिल की जो दवा करते हैं!!



इश्क नाकाम जब हो गया!
दूर हर कामरानी हुई!!

ले के दोशीज़गी का नकाब!
वो नज़र अब सियानी हुई!!



جو در شہر سے جنگل کے درمیا ہوگا وہی تو خانہ بدوشوں کا کارواں ہوگا

ہے جنکے نیچے زمیں کی کچھی ہوئی چادر اسہنیں کا اور طرہ سنایہ نیلا آسمان ہوگا

ہے کا اجسکا محبت کی زندگی مینا کھلی ہواؤں میں پل کر کے وہ جوں ہوگا

جہاں بھی راہ میں کوئی نشان دیکھو گے ہمارے عشق کے قدموں کا وہ نشان ہوگا

چلے تھے ہم تو رہ عاشقی میں شاد مینک
یہ کیا شب بستی کہ ہر گام امتحان ہوگا

آپ کی مہر بانی ہوئی
مہر بال شادمانی ہوئی

مل گئی ہے خدائی ہمیں
آپ کی جو نظر ہو گئی

जो दूर शहर से जंगल के दरमियां होगा!
वही तो खाना बंदोशों का कारवां होगा!!

है जिन के नीचे ज़मी की बिछी हुई चादर!
उन्हीं का औढ़ना ये नीला आसमां होगा!!

है काम जिस का मोहब्बत की जिंदगी जीना!
खुली हवाओं में पल कर के वो जहां होगा!!

जहां भी राह में कोई निशान देखोगे!
हमारे इश्क के कदमों का वो निशां होगा!!

चले ये हम तो रहे आशिकी में 'शाद "मयंक"!
ये क्या ख़बर थी के हर गाम इम्तिहां होगा!!



मिल गई है खुदाई हमें!
आप की महरबानी हुई!!

आप की जो नज़र हो गई!
महरबां शादमानी हुई!!



کوئی لمحہ غمِ فرقت سے دل بہلا نہیں سکتا
 کہیں آرامِ اس دل کو میرا نہیں سکتا

کھلونوں کی طرح اس نے میرا دل توڑ ڈالا ہے
 کھلونا اب کوئی اس شوخ کو بہلا نہیں سکتا

جو مجھ سے دور تھے اب ان کی قربت ہے مجھے حاصل
 مگر قربت کچھ ایسی ہے کہ ان کو پا نہیں سکتا

عُدو میرے تعقب میں ہیں سائے کی طرح ہر دم
 میں اپنے پیار کا پیغام سبھی پہنچا نہیں سکتا

میک اب تم بدلنا سیکھ لو اس وقت کی مانند
 بدلتا وقت ورنہ اس تم کو آ نہیں سکتا



دن خوشی سے گزرنے لگے
 آج پھر وہ ابھرنے لگے

وہ عنایت جو کرنے لگے
 عاشقی نے ڈلو یا جنہیں

कोई लम्हा ग़म-ए-फुकर्त से दिल बहला नहीं सकता!
 कहीं आरा इस दिल को मयस्सर आ नहीं सकता!!

खिलौनों की तरह उसने मेरा दिल तोड़ा है!
 खिलौना अब कोई उस शोख को बहला नहीं सकता!!

जो मुझ से दूर थे अब उनकी कुर्बत है मुझे हासिल!
 मगर कुर्बत कुछ ऐसी है कि उनके पा नहीं सकता!!

उदू मेरे तअककुब में है साये की तरह हर दम!
 मैं अपने प्यारे का पैग़ाम भी पहुंचा नहीं सकता!!

'मयंक' अब तुम बदलना सीख लो इस वक़्त की मानी!
 बदलता वक़्त वर्ना रास तुम को आ नहीं सकता!!

□

वो इनायत जो करने लगे!
 दिन खुशी से गुज़रने लगे!!

आशिकी ने डुबोया जिन्हें!
 आज फिर वो उभरने लगे!!

□

یادوں کا نور دل میں چھپائے ہوئے ہیں ہم
اس دل کو آج طور بنائے ہوئے ہیں ہم

تاثر ہی کہیں گے محبت میرے دوستو!
اُن کا ہر ایک ناز اُسٹھائے ہوئے ہیں ہم

یہ حوصلہ دید ہمارا تو دیکھئے
اُن کا نقاب رخ سے اُسٹھائے ہوئے ہیں ہم

ہوکتگان شوق کی جانب سبھی اک نظر
چشمِ کرم کی آس لگانے ہوئے ہیں ہم

دنیا میں آپ یوں ہی سلامت رہیں حضور
بہر دعا یہ ہاتھ اُسٹھائے ہوئے ہیں ہم

اظہارِ جمال کی نہیں جرات تو کیا مینک
اُن کے نفسِ نفس میں سمائے ہوئے ہیں ہم



قتل کی رات آنے کو ہے وہ مینک۔ اب سنو رنے لگے

यादों का नूर दिल में छुपाए हुए हैं हम!
इस दिल को आज तूर बनाए हुए हैं हम!!

तासीर ही कहेंगे मोहब्बत में दोस्तों!
उनका हर इक नाज़ उठाए हुए हैं हम!!

ये होसला-ए-दीद हमारा तो देखिये!
उन का नकाब रूख से उठाए हुए हैं हम!!

तो कश्त गान-ए-शौक की जाबि भी इक नज़र!
चश्म-ए-करम की आस लगाए हुए हैं हम!!

दुनिया में आप यूँ ही सलामत रहें हुज़ूर!
बहर-ए-दआ ये हाथ उठाए हुए हैं हम!!

इज़हार-ए-हान की नहीं जुअत तो क्या 'मयंक'!
उनके नफ़स नफ़स में समाए हुए हैं हम!!

□

कत्ल की रात आने को है!
वो "मयंक" अब संवरने लगे!!

□

خامشی جب پیام ہو جائے بے زبانی کلام ہو جائے
 آج محفل میں آ رہے ہیں وہ آئے نظر احترام ہو جائے
 آنکھ سے آنکھ تو ملا لیجئے اس طرح بھی کلام ہو جائے
 زلف سنورے تو صبح کی آمد زلف بکھرے تو شام ہو جائے

اب تصویر میں ہی مینک ان سے
 آؤ رسم سلام ہو جائے



جو خفا ہم سے تھے کل تک آج وہ بات کرنے لگے
 میری بے رنگ الفت میں وہ رنگ خود آ کے بھرنے لگے

खामशी जब पयाम हो जाये!
 बे जुबानी कलाम हो जाये!!

आज मेहफिल में आ रहे हैं वो!
 ऐ नज़र ऐहताराम हो जाये!!

आंख से आंख तो मिला लीजे!
 इस तरह भी कलाम हो जाये!!
 जुल्फ संवरे तो सुबह की आमद!
 जुल्फ बिखरे तो शाम हो जाए!!

अब तसत्वर में ही "मयंक" उन से!
 आओ रस्म-ए-सलाम हो जाये!!

□

जो खफ़ा हम से थे कल तलक!
 आज खुद बात करने लगे!!

मेरी बे रंग उलफ़त में वो!
 रंग खुद आ के भरने लगे!!

□

طے جس کو اَلْم وہ خوگرِ آلام ہوتا ہے
اگر قیمت بڑی ہے آدمی بد نام ہوتا ہے

ہمیں تم خود فراموشی کا کیوں الزام دیتے ہو
بجھوں کی ابتدا کا لبس یہی انجام ہوتا ہے

بنا سوچے کسی سے دل لگانا ہے تو اے یار و
تو اس کے سر محبت کا جنون سے قہا ہوتا ہے

شہر کے لوگ کیا جانے سبب میسری تباہی کا
جسے بد نام وہ کر دیں وہجا بد نام ہوتا ہے

یتک اب اس بد لے وقت کا شکوہ ہے لاحال
بد لے وقت میں کس کو کہاں آرام ہوتا ہے



ہر حقیقت کو پا لیجئے
صرف وعدہ نبھائیجئے

رنج و غم کو اُسٹھائیجئے
آپ قسمیں نہ کھائیجئے

मिले जिस को अलम वो खूगर-ए-आलाम होता है!
अगर किम्मत बुरी है आदमी बदनाम होता है!!

हमें तुम खुद फ़रामोशी का क्यूं इल्जाम देते हो!
जूनू की ईन्तहा का बस यही अंजाम होता है!!

बिना सोचे किसी से दिल लगाना है तो ऐ यारो!
तो उस के सर मोहब्बत का जुनून-ए-ख़ाम होता है!!

शहर के लोग क्या जाने सबक मेरी तबाही का!
जिसे बदनाम वो कर दें वही बदनाम होता है!!

"मयंक" अब इस बदलते वक़्त का शिकवा है ला हासिल
बदलते वक़्त में किस को कहां आराम होता है!!

□

रंजो ग़म को उख़ लीजिये!
हर हकीकत को पाली जिये!!

आग कसमें न खाएँ हज़ूर!
तिर्फ़ वादा निभा लीजिये!!

□

رے ہاتھوں میں دل کا ساتھ ہوگا تو عالم گوش بر آواز ہوگا
 یہ میرا جذبہ دل کہہ رہا ہے انہیں پردے میں بھی کچھ ناز ہوگا
 وہ روتے روتے جو ہنسنے لگے ہیں تو اس انداز میں بھی راز ہوگا
 وہ جا کر دُور کچھ پاس آئیں ہمیں قسمت پہ اپنی ناز ہوگا

مینک دنیا ہی ساری بے سُر ہے
 تو ساز دل سبھی بے آواز ہوگا



کم نظر تاب کیا لائیں گے رُخ پہ پردہ گرا لیجئے
 میں نہ شکوہ کروں گا کبھی شوق سے دل چُرا لیجئے

तेरे हाथों में दिल का साज होगा!
तो आलम गोश कर आवाज़ होगा!!

ये मेरा जज़्ब-ए-दिल कह रहा है!
उन्हें पर्दे में भी कुछ नाज़ होगा!!

वो रोते रोते जो हंसने लगे हैं!
तो उस अंदाज़ में भी राज़ होगा!!

वो जाकर दूर फिर कुछ पास आएँ!
हमें किसमत पे अपनी नाज़ होगा!!

"मयंक" दुनिया ही सारी बे सुरी हैं!
तो साज़-ए-दिल भी बे आवाज़ होगा!!



कम नज़र ताब क्या लायेंगे!
रुख़ पे पर्दा गिरा लीजिये!!

मैं न शिकवा करूंगा कभी!
शौक दिल से चुरा लीजिये!!



فراقِ یارِ مینا کیا ہو گیا ہے ہر ایک ارمانِ دل میں سو گیا ہے
 وہ لمحہ جو سکونِ دل بنا تھا پریشاں ہوں کہاں وہ سو گیا ہے
 ذرا پاکیزگی کی شان دکھو وہ تھوٹی ہاتھ اپنے دھو گیا ہے
 بت اس کا مجھ کوئی بتا دے میرے دل سے نکل کر جو گیا ہے

کسی کے عشق میں برباد ہوں میں
 صد الفت کا کچھ تو مل گیا ہے



اک ذرا سُکرا دیکھئے پھر جو بچا میں سزا دیکھئے
 آجے بیگِ بہن کے یارِ الم زندگی میں اٹھائیے

फिराके-यार में क्या हो गया है!
हर इक अरमान दिल में सो गया है!!

वो जो लम्हा सुकून-ए-दिल बना था!
परेशां हूं कहां वो खो गया है!!

ज़रा पाकीज़गी की शान देखो!
वो खूनी हाथ अपने धो गया है!!

पता उसका मुझे कोई बता दे!
मेरे दिल से निकल कर जो गया है!!

किसी के इश्क में बरबाद हूं मैं!
सिला उलफ़त का कुछ तो हो गया है!!

□

इक ज़रा मुसकुरा दीजिये!
फिर जो चाहे सज़ा दीजिये!!

ए मयंक हंस के बार-ए-अलम!
ज़िंदगी में उख़ लीजिये!!

□

حُسن جو بے حجاب ہو جائے عشقِ سبھر کامیاب ہو جائے

ایک نظر دیکھ لے جو وہ ہنس کر دل کا خانہ خراب ہو جائے

عام ہو جائیں جو ترے جلوے خود خجل آفتاب ہو جائے

مَت نظروں سے تو اگر دیکھے زندگی شراب ہو جائے

ان پہ مَر جاؤں اے مینک اور بس
زندگی کامیاب ہو جائے



دل میں شعلے دہکنے لگے اور ان کو ہوا دیکھے

हुस्न जो बे हिजाब हो जाये!
इश्क़ फिर कामयाब हो जाये!!

इक नज़र देख लें जो वो हंस कर!
दिल का ख़ाना ख़राब हो जाऐ!!

आम हो जाएं जो तेरे जलवे!
ख़ुद ख़िजल आफ़ताब हो जाये!!

मस्त नज़रों से तू अगर देखे!
ज़िंदगानी शराब हो जाये!!

उन पे मर जाऊं ए "भयंक" और बस!
ज़िंदगी कामयाब हो जाये!!

□

दिल में शोले दहकने लगे!
और उन को हवा दीजिये!!

□

غم کا رونا عمر بھر ہے کیا کریں حسن یار و فتنہ گر ہے کیا کریں
 رات دن ملنے کی کرتے ہیں دعا بہر دعا اب بے اثر ہے کیا کریں
 آنکھ دھرتی پر سٹھرتی ہی نہیں آسماں پر ہر نظر ہے کیا کریں
 یار نے دیکھا ہے اس انداز سے تیروں سے جھپٹی جگہ ہے کیا کریں

گلستاں کی بات مت پوچھو مینک
 ہرکلی کی آنکھ تر ہے کیا کریں



کوئی مرنے چلا عشق میں زندگی کی دعا کیجئے
 اب تو جلتے سے دل بھر گیا زندگانی کو کیا کیجئے

ग़म का रोना उस भर है क्या करें!
हुस्न यारों फिलानगर है क्या करें!!

रात दिन मिलने की करते हैं दुआ!
हर दुआ अब बे असर है क्या करें!!

आंख धरती पर ठहरती ही नहीं!
आसमां पर हर नज़र है क्या करें!!

यार ने देखा है इस अंदाज़ से!
तीरों से छलनी जिगर है क्या करें!!

गुलसितां की बात मत पूछे "मयंक"!
हर कली की आंख तर है क्या करें!!



कोई मरने चला इश्क में!
जिंदगी की दुआ कीजिये!!

अब तो जीने से दिल भर गया!
जिंदगानी को क्या कीजिये!!



محبت کا تری حقدار ہوں میں تیرا انکار ہوں اقرار ہوں میں
 جنونِ عشق کا ایسا اثر ہے خود اپنے آپ سے بیزار ہوں میں
 مجھے اپنا بنا لے میرے ہمدام تیرا چاہت ہوں تیرا پیار ہوں میں
 یہ حالت جن کی فرقت میں ہوتی ہے وہ کہتے ہیں بہت بیزار ہوں میں

مینک اچھا کوئی کیا کر سکے گا
 کسی کے عشق کا پیمانہ ہوں میں



یہ ستم بار بار کیجئے
 کیا کسی سے گلا کیجئے

دل پہ خنجر ستم کے چلے
 بد نصیبی ہی سمجھو مینک

मोहब्बत का तेरी हकदार हूं मैं!
तेरा इनकार हूं इकरार हूं मैं!!

जुनून-ए-इश्क का ऐसा असर है!
खुद अपने आप से बेज़ार हूं मैं!!

मुझे अपना बनाले मेरे हम दम!
तेरी चाहत हूं तेरा प्यार हूं मैं!!

ये हालत जिन की फुर्कते में हुई है!
वो कहते हैं बहुत बेज़ार हूं मैं!!

"मयंक" अच्छा कोई क्या कर सकेगा!
किसी के इश्क का बिमार हूं मैं!!



दिल पे खन्ज़र सितम के चले!
ये सितम बारहा कीजिये!!

बद नसीबी ही समझो "मयंक"!
क्या किसी से गिला कीजिये!!





اپنی آنکھوں میں سورج چھپاتے ہوئے
ہم بھٹکتے رہے روشنی کے لئے

(کے کے سنگھ مینک)

سٹار پیکٹ سیریز کی غیر معمولی پیشکش

اُردو کے مقبول شعراء
کی منتخب شاعری

(اُردو، ہندی میں یکجا)

● البرار آبادی کی شاعری
● نذیر بنارسی کی شاعری
● افتخار عارف کی شاعری
● کرشن موہن کی شاعری
● مینک کی شاعری

● میسر کی شاعری
● درد کی شاعری
● جسگر کی شاعری
● جوشن کی شاعری
● نریش کمار شاد کی شاعری

● غالب کی شاعری
● نطق کی شاعری
● شکیں کی شاعری
● مجاز کی شاعری
● ساحر کی شاعری

● امربا پریم کی شاعری
● کیفی اعظمی کی شاعری
● عدم کی شاعری
● فیض کی شاعری
● اصغر کی شاعری

● دماغ کی شاعری
● اقبال کی شاعری
● حفیظ کی شاعری
● قتیل کی شاعری
● جاں نثار اختر کی شاعری

اس سلسلے میں اردو کے دیگر مقبول شعراء کی منتخب شاعری جلد پیش کر جائیگی

کم قیمت میں معیاری اور مقبول ادب پیش کرنے والے

سٹار پیکٹ بکس

کے کے سنگھ مینک

کی

شاعری

(اُردو، ہندی میں یکجا)
مرتب: امر دہلوی

Dehvi Amar (Comp.):
MAYANK KI SHAIRI
(Poetry Collection)
Star, New Delhi, 1985
Rs. 6.00

سول ڈسٹری بیوٹرز
سٹار پبلی کیشنز (سیلز)
۱۶۴۱ - دریا کلاں - دہلی - ۱۱۰۰۰۶

ناشر: سٹار پبلی کیشنز (پرائیوٹ) لمیٹڈ
۴/۵ بی آصف علی روڈ، نئی دہلی - ۱۱۰۰۰۲

۶۱۹۸۵ پیلا ایڈیشن

قیمت: صرف چھ روپے 6/-

شاعر کے بارے میں

نام کرشن گار سنگھ، تخلص مینک اکبر آبادی، پیدائش ۱۹۴۴ء
 گاؤں پڈاری قبیلہ راجپوتوں کا علاقہ اتر پردیش میں ہوئی۔
 لیکن بعد میں آگرہ (اکبر آباد) میں اپنے بڑے بھائی ہیش چندر
 کریم کے پاس آ گئے۔ جناب کریم نے مکمل تعلیم دلائی۔ والد کے انتقال کے
 بعد بھائی نے ہی والد کا پیار دیا۔

۱۹۶۲ میں کے کے مینک نے بی اے پاس کیا۔

۱۹۶۴ میں ایم اے پاس کیا اور ۱۹۶۶ میں ایل ایل بی کی ڈگری حاصل کی۔

۱۹۶۹ میں مغربی ریلوے میں انسرین گئے۔ ۱۹۷۱ میں جناب پورن سنگھ
 پٹیل کی دختر نیک اختر محترمہ سے شادی ہوئی۔

شعور و شاعری کا شوق کچھ اس طرح ہوا کہ شروع شروع میں لوک
 دھنوں پر گیت لکھنے لگے۔ ایسا شری کرشن بھگوان کی جائے پیدائش پر
 عام ادب میں دلچسپی رکھنے کے باعث ہوا۔

برج کی پادوں بھومی پر اکثر ایسا ذوق و شوق پیدا ہو جاتا ہے پھر
 غزل، نظم وغیرہ کہنے کا سلسلہ چلا اور نامعلوم یہ شوق کب نشے میں بدل گیا۔
 اب جب وقت ملتا ہے کچھ نہ کچھ کہتے رہتے ہیں۔ ریلوے خدمت کے
 دوران مغربی ریلوے کے راج کوٹ مرکز پر ہندی جماعت راج کوٹ کے
 زیر اہتمام نشر ہونے والے ریڈیو راج کوٹ کے ذریعہ کچھ گیت ریکارڈ ہوئے۔
 ۱۹۸۰ میں مینک صاحب مغربی ریلویز کے رتلام مرکز پر آ گئے۔

یہاں انہوں نے شاعری باقاعدہ طریقے سے شروع کر دی۔ اور استاد شاعر صوفی حضرت بسمل نقشبندی رتلاوی کو اپنا استاد بنایا۔ شعر و شاعری کے ساتھ عروض و شاعری کے اوزان، بھی ان سے سیکھے۔ مینک صاحب کی ابھی تک چار مجموعے شائع ہو کر منظر عام پر مقبولیت حاصل کر چکے ہیں۔ جن میں کچھ گیت 'انا کے نام'، 'مذہب عشق'، 'مینک کی غزلیں اور جنون (اردو) ہیں۔ اس کے علاوہ آل انڈیا ریڈیو اور ٹیلیوژن پر ان کی غزلیں سننے کو ملتی ہیں۔

آپ نے حسن و شباب، غم اور خوشی، زلف و رخسار، وارثانِ دل، ہجو و وصال، صحرا اور گلشن، جام اور مینا وغیرہ پر خوب کہا ہے۔

جناب مینک کی سب سے بڑی خوبی یا کمال کہہ سکتے ہیں، یہ ہے کہ موقع بہ موقع آپ کوئی البدیہ اشعار کہنے پر عبور حاصل ہے۔ اور آپ زود گو شعرا میں شمار کئے جاتے ہیں۔

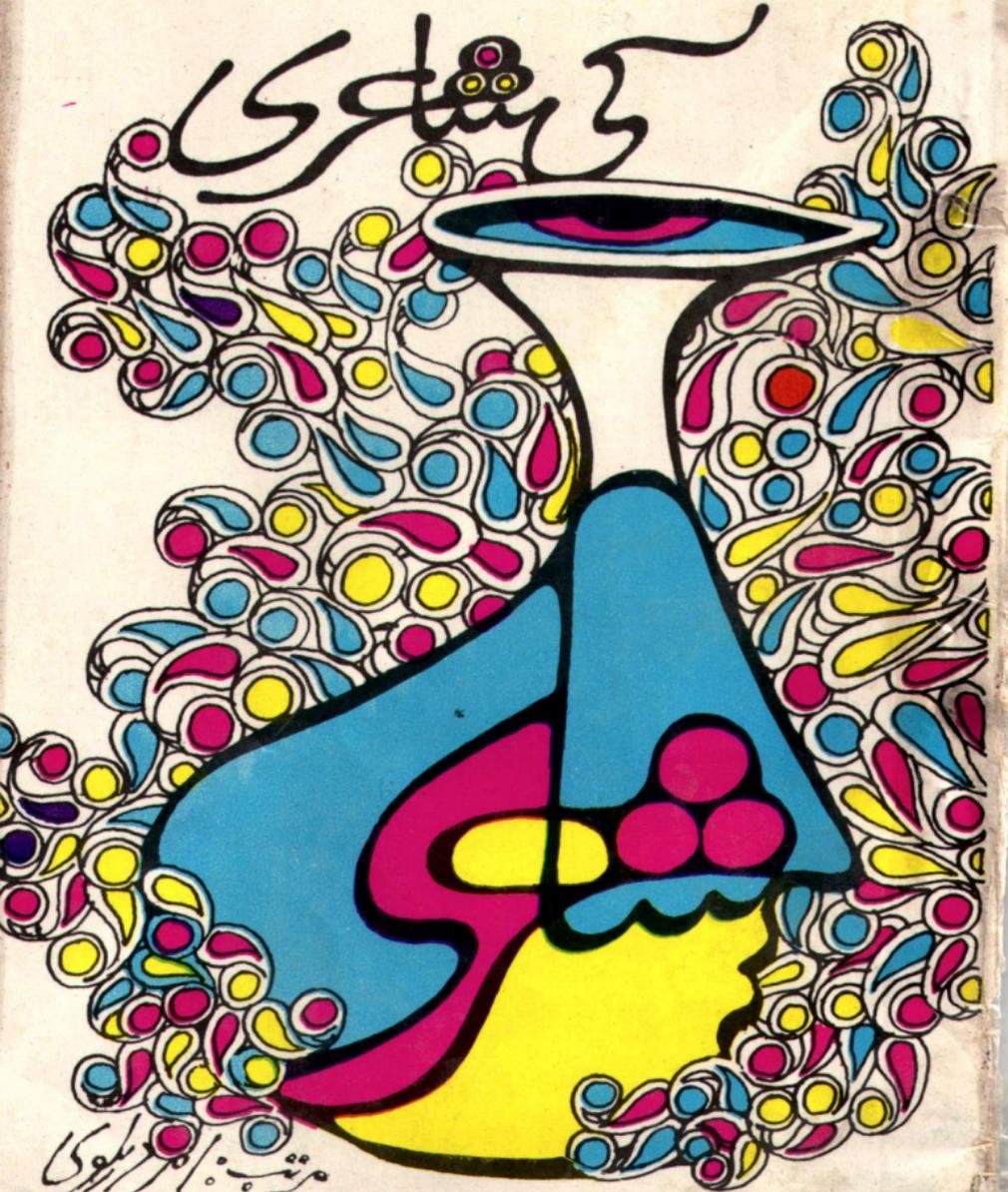
آپ کی زبان کی خاصیت یہ ہے کہ وہ عام فہم ہے۔ اور شعر و سخن سے ذوق و شوق رکھنے والے حضرات کی سمجھ میں فوراً آجاتی ہے۔ آپ ترقی پسند لوگوں کے ساتھ کھلے دل سے دیکھے جاتے ہیں بلکہ یوں کہیے کہ آپ ترقی پسند گروپ کے حامی ہیں۔

مینک صاحب کے پسندیدہ شعرا غالب، میتھ، موہن، جگر، جوشنس، فراق، شکیل، ساحر، فیض احمد فیض اور دشینت کمار وغیرہ ہیں۔

دور حاضر میں کے سنگھ مینک اکبر آبادی رتلا مگر پریسینئر ڈی، سی، ایس کے عہدے پر فائز ہیں۔

مینک

کی شاعری



میرزا محمد علی